सांध्य दैनिक
नई दृष्टिबिंदु
सच की शक्ति, जनता की दृष्टि
PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

सु-विचार

" वक्त को बुरा कैसे कह दें, यही तो सबकी असलियत दिखाता है
समय का पता नहीं चलता, आपनो के साथ लेकिन
आपनो का पता चलता है समय के साथ ...!!

अज्ञात...

वर्ष–01 अंक–292 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, गुरुवार 12 नवंबर 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य –2 रुपए

नक्सलवाद के अंत के बाद बदलता बस्तर, शांति और विकास की नई सुबह

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर-जगदलपुर

दशकों तक भय और हिंसा के साए में रहा बस्तर संभाग अब शांति, सुरक्षा और विश्वास के साथ विकास की नई राह पर अग्रसर है। नक्सलवाद के प्रभाव के समाप्त होने के बाद अंदरूनी और दूरस्थ आदिवासी अंचलों में शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क और आजीविका के नए अवसर खुल रहे हैं।

पहले और अब में बड़ा अंतर

पहले बस्तर के कई गांवों में हिंसा और असुरक्षा के कारण स्कूल, पक्की सड़कें, पुल, स्वास्थ्य सुविधाएं और मोबाइल नेटवर्क तक नहीं पहुंच पाता था। शासकीय योजनाएं भी सीमित थीं।



अब सुरक्षा बलों और प्रशासन की सक्रियता से अंदरूनी क्षेत्रों में शासन की पहुंच मजबूत हुई है। सड़कों, पुलों का विस्तार हो रहा है। हाट-बाजार क्लीनिक, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, मोबाइल मेडिकल यूनिट से स्वास्थ्य सेवाएं पहुंच रही हैं। स्कूलों, आश्रम शालाओं, आंगनबाड़ी केंद्रों से बच्चों को शिक्षा मिल रही है। दूरस्थ गांवों तक बिजली, मोबाइल टावर और इंटरनेट कनेक्टिविटी पहुंच रही है।

रोजगार की नई संभावनाएं

बस्तर में हल्दी, इमली, कोदो-कुटकी, बांस जैसी स्थानीय उपज को बढ़ावा दिया जा रहा है। महुआ, तेंदूपत्ता, लाख, शहद के संग्रहण और प्रसंस्करण से वनोपज आधारित अर्थव्यवस्था मजबूत हो रही है। महिलाओं और युवाओं के लिए सिलाई, कढ़ाई, खाद्य प्रसंस्करण, हस्तशिल्प में कौशल प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्राकृतिक जलप्रपातों और जनजातीय संस्कृति के जरिए पर्यटन से स्थानीय रोजगार बढ़ रहा है।

आईजी बस्तर का संदेश

आईजी बस्तर रेंज बद्री नारायण मीणा ने कहा कि उद्देश्य केवल सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ करना नहीं, बल्कि हर नागरिक के मन में विश्वास पैदा करना, उन्हें अधिकारों के प्रति जागरूक करना और शासन की योजनाओं से जोड़ना है। बस्तर के समग्र विकास और स्थायी शांति के लिए पुलिस, प्रशासन और जनता के समन्वित प्रयास जारी रहेंगे।

बस्तर अब संघर्ष और भय की पहचान से आगे बढ़कर शांति, विश्वास और समृद्धि का प्रतीक बन रहा है, जहां बंदूक की जगह विकास और भय की जगह विश्वास ने ले ली है।

दीपावली में छलका जाम, टूटा शराब बिक्री का रिकॉर्ड, 10% ज्यादा बिकी



नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

दीपावली पर्व पर राजधानी में मदिरा प्रेमियों ने जमकर जाम छलकाए। इस बार दीपावली में शराब बिक्री ने पिछले साल का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। आंकड़ों के मुताबिक गत वर्ष की तुलना में करीब 10 फीसदी अधिक शराब की बिक्री हुई है।

विभाग से मिले बिक्री राशि के आंकड़ों के अनुसार दीपावली के मुख्य 4 दिनों में ही बिक्री में बंपर उछाल देखने को मिला –

6 नवंबर 2026 को – 9.77 करोड़ की बिक्री, पिछले साल से 8.8% अधिक

7 नवंबर 2026 को – 12.42 करोड़ की बिक्री, 9.1% अधिक

8 नवंबर 2026 को – 11.91 करोड़ की बिक्री, 9.8% अधिक

09 नवंबर 2026 को – 11.51 करोड़ की बिक्री, 12.3% अधिक

2025 में 18 से 21 अक्टूबर के बीच जहां कुल करीब 41 करोड़ की बिक्री हुई थी, वहीं 2026 में 06 से 09 नवंबर के बीच यह आंकड़ा 45 करोड़ को पार कर गया।

देशी मदिरा, स्प्रिट और माल्ट तीनों की बिक्री में इजाफा हुआ है। सबसे ज्यादा बिक्री माल्ट और स्प्रिट में देखी गई है। 5 नवंबर को बिक्री में 2.3% की मामूली गिरावट थी, लेकिन उसके बाद लगातार बिक्री ने रफ्तार पकड़ ली। बताया जा रहा है कि दीपावली पर लंबी छुट्टियां, बोनस और बाजार में नकदी की आवक के कारण शराब दुकानों में भीड़ उमड़ी रही।

अहमदाबाद में अभिन्न यादव ने गृह मंत्री से की भेंट पुस्तक बस्तर : भय से भरोसे तक का विमोचन



नई दृष्टिबिंदु / बालोद-अहमदाबाद

भारतीय जनता युवा मोर्चा के जिला मीडिया प्रभारी अभिन्न यादव ने 10 नवंबर को गुजरात के अहमदाबाद में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री से सौजन्य मुलाकात की। इस दौरान अभिन्न यादव द्वारा लिखित पुस्तक बस्तर : भय से भरोसे तक का विमोचन केंद्रीय गृह मंत्री के हाथों किया गया। पुस्तक को देखकर केंद्रीय मंत्री ने प्रसन्नता व्यक्त की और विषय तथा प्रयास की सराहना की। दीपावली के अवसर पर उन्होंने अभिन्न यादव को मिठाई भेंट कर शुभकामनाएं भी दीं। पुस्तक में बस्तर में बदलते हालात, भय के वातावरण से विश्वास की ओर बढ़ते कदम और क्षेत्र में शांति व विकास की उम्मीदों को सामने लाने का प्रयास किया गया है। पुस्तक को लेकर क्षेत्र में उत्सुकता देखी जा रही है।

महादेव सट्टा केस : सीबीआई रिमांड खत्म

सौरभ चंद्राकर न्यायिक हिरासत की ओर, ईडी ने मांगी कस्टडी



नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

महादेव ऑनलाइन सट्टा ऐप के मुख्य आरोपी सौरभ चंद्राकर को 8 दिन की उड़क कस्टोडियल रिमांड खत्म होने के बाद बुधवार को रायपुर की स्पेशल कोर्ट में कड़ी सुरक्षा के बीच पेश किया गया।

CBI ने दोबारा रिमांड नहीं मांगी और आरोपी को न्यायिक रिमांड पर भेजने की मांग की है। वहीं ED ने कोर्ट में अर्जी लगाकर उसके खिलाफ जारी नॉन-बेलेबल वारंट को एक्जीक्यूट कराने की मांग की है। कोर्ट में दोनों पक्षों की बहस पूरी हो गई है, फैसले का इंतजार है।

सुनवाई के दौरान CBI और ED दोनों एजेंसियों के अधिकारी कोर्ट में मौजूद रहे। ED की ओर से अधिवक्ता सौरभ पांडे और बचाव पक्ष की ओर से तुषार गिरी ने पैरवी की।

4 अधिकारियों को दिल्ली बुलाया गया

रिपोर्ट के मुताबिक इस मामले में 4 अधिकारियों को नोटिस जारी कर पूछताछ के लिए दिल्ली बुलाया गया है। हालांकि ये अधिकारी कौन हैं, इसका खुलासा नहीं हुआ है।

फरारी का पूरा ट्रेक

ED की चार्जशीट के मुताबिक सौरभ और रवि उप्पल ने 2023 में वानुअतु की नागरिकता और पासपोर्ट हासिल किए। उसी साल वानुअतु पासपोर्ट पर ऑस्ट्रेलिया पहुंचने पर उसे इमिग्रेशन ने रोक दिया। नवंबर 2023 में इंटरपोल ने रेड कॉर्नर नोटिस जारी किया। अक्टूबर 2024 में वअए में हिरासत में लिया गया, लेकिन प्रत्यर्पण प्रक्रिया पूरी नहीं होने पर छोड़ दिया गया। जून-जुलाई 2026 में कथित फर्जी इंडोनेशियाई पासपोर्ट पर ओमान पहुंचने पर 8 जुलाई 2026 को रॉयल ओमान पुलिस ने गिरफ्तार किया और मस्कट के अल खौद हाई सिक्योरिटी डिटेंशन सेंटर में 116 दिन रखा।

ओमान हिरासत के दौरान सौरभ ने भारत की जेल में जान को खतरा बताते हुए परिवार की सुरक्षा और राजनीतिक कनेक्शन, पैसों के लेन-देन व विदेशी संपत्तियों की जानकारी देने की पेशकश की थी।

जूस दुकान से सट्टा साम्राज्य तक

जांच में सामने आया है कि भिलाई निवासी सौरभ पहले "जूस फैक्ट्री" नाम से दुकान चलाता था। 2017 में रवि उप्पल के साथ ऑनलाइन सट्टा शुरू किया और 2019 में दुबई जाकर "महादेव बुक ऑनलाइन" ऐप लॉन्च किया। IPL 2021 के दौरान 2000 करोड़ से ज्यादा की सट्टेबाजी और 99 लाख से ज्यादा यूजर्स जुड़ने का दावा है।

CBI के मुताबिक नेटवर्क चलाने के लिए सरकारी कर्मचारियों को रिश्वत दी गई। छत्तीसगढ़ सरकार ने 13 FIR CBI को सौंपी थीं, जिनमें से 2 में चार्जशीट दाखिल हो चुकी है। ED मनी लॉन्ड्रिंग एंगल से जांच कर रही है और कई संपत्तियां अटैच कर चुकी है।

दो करोड़ की लूट की कहानी निकली फर्जी, कर्ज से बचने के लिए व्यापारी ने रची साजिश

नई दृष्टिबिंदु / बीजापुर

बस्तर संभाग में सनसनी फैलाने वाली दो करोड़ रुपये की लूट की कहानी पूरी तरह फर्जी निकली है। कर्ज के बोझ से परेशान ज्वेलरी व्यापारी ने कर्जदारों से बचने के लिए साथियों के साथ मिलकर लूट की मनगढ़ंत कहानी रच डाली। बीजापुर पुलिस ने 100 से अधिक CCTV फुटेज और 16 घंटे की नाकेबंदी के बाद इस फर्जी लूट का पदार्फाश किया है।

पाडे मुर्गा चौक पर लूट की शिकायत

9 नवंबर को गीदम निवासी ज्वेलरी व्यापारी स्वरूप सोनी ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि वह तूफान वाहन में चालक देवेंद्र ठाकुर और कपड़ा व्यापारी ललित बुरड़ के साथ भैरमगढ़ से गीदम लौट रहा था। शाम करीब 6 बजे नेशनल हाईवे-63 पर नेलसनार थाना क्षेत्र के पांडेमुर्गा चौक के पास जंगल में तीन अज्ञात लोगों ने पिस्टल और चाकू दिखाकर बैग लूट लिया। बैग में दो करोड़ के सोने-चांदी के जेवर और नकदी होने का दावा किया गया था। आरोपियों ने तीनों के मोबाइल भी लूट लिए थे।

सीसी टीवी से खुला राज

शिकायत गंभीर होने पर पुलिस ने तत्काल नाकेबंदी कर 100 से अधिक कैमरों के फुटेज खंगाले। तकनीकी साक्ष्यों और अलग-अलग पूछताछ में कहानी पर संदेह गहराया। सख्ती से पूछताछ करने पर व्यापारी टूट गया और कबूल किया कि कर्ज से बचने के लिए उसने झूठी कहानी बनाई थी।

पुलिस के अनुसार यह पुलिस को गुमराह करने की सुनियोजित साजिश थी। मामले में आगे की वैधानिक कार्रवाई की जा रही है।

गुमशुदगी की सूचना पर तेलीबांधा पुलिस की बड़ी कार्रवाई, हत्या का खुलासा



नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

तेलीबांधा थाना क्षेत्र में युवक की गुमशुदगी के मामले में पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए हत्या के सनसनीखेज मामले का खुलासा किया है। पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर मृतक का शव बरामद किया है। प्रार्थिया ने शिकायत दी थी कि उसका पुत्र निरंजन पाल 10 नवंबर की रात करीब 8.30 बजे से लापता है। सूचना पर सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के अनुरूप गुमशुदगी दर्ज कर पुलिस ने पतासाजी शुरू की।

जांच में राजा नायडू पर संदेह होने पर उससे पूछताछ की गई। पूछताछ में विनोद डांडेकर की संलिप्तता सामने आई। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि विनोद को शक था कि 10 साल पहले उसके बेटे की हत्या में निरंजन पाल शामिल था। इसी पुरानी रंजिश के चलते दोनों ने निरंजन को कमल विहार सेक्टर-13 बुलाया, शराब पिलाई और फिर गला दबाकर हत्या कर दी।

साक्ष्य छिपाने के लिए मृतक के कपड़े जलाकर शव को गटर में फेंक दिया और उसकी एक्टिवा को बाकल नदी के पास छिपा दिया। आरोपियों की निशानदेही पर पुलिस ने शव, जले हुए कपड़े और एक्टिवा बरामद कर ली है। आरोपी राजा नायडू तेलीबांधा का गुंडा-बदमाश है। दोनों आरोपियों के खिलाफ हत्या सहित अन्य धाराओं में कार्रवाई कर गिरफ्तार किया गया है।

लिव-इन में रह रही महिला की संदिग्ध मौत, प्रेमी हिरासत में

नई दृष्टिबिंदु / बलौदाबाजार

सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र के ग्राम रवान में किराए के मकान में 50 वर्षीय महिला का शव मिलने से सनसनी फैल गई। मृतका की पहचान रेवती जायसवाल (50) के रूप में हुई है जो पिछले 14-15 वर्षों से 70 वर्षीय धनसाय विश्वकर्मा के साथ लिव-इन रिलेशनशिप में रह रही थी।

पुलिस के अनुसार गुरुवार 12 नवंबर को सुबह करीब 10 बजे सूचना मिली कि रवान के एक किराए के मकान में महिला का शव पड़ा है। सूचना पर सिटी कोतवाली पुलिस और डायल 112 की टीम मौके पर पहुंची। प्रारंभिक पूछताछ में सामने आया कि 11 नवंबर की रात करीब 11 बजे दोनों शराब के नशे में थे और किसी बात को लेकर विवाद व मारपीट हुई थी। इसके बाद महिला की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। हत्या की आशंका जताई जा रही है।

पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण कर पंचनामा कार्रवाई की है और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। संदेही धनसाय विश्वकर्मा से पूछताछ की जा रही है। पुलिस का कहना है कि पीएम रिपोर्ट के बाद ही मौत के वास्तविक कारणों का खुलासा हो पाएगा।

स्वच्छ सर्वेक्षण में छग का परचम, बिल्हा ने हासिल किया देश में पहला स्थान, रायपुर, बिलासपुर भी पुरस्कृत

नई दृष्टिबिंदु / नईदिल्ली-रायपुर

स्वच्छता और बेहतर नगरीय प्रबंधन की दिशा में छत्तीसगढ़ को राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल हुई है। भारत सरकार के आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय द्वारा आयोजित स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 के अंतर्गत छत्तीसगढ़ के तीन नगरीय निकायों नगर पालिक निगम रायपुर, नगर पालिक निगम बिलासपुर और नगर पंचायत बिल्हा को राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। विशेष रूप से बिलासपुर जिले की नगर पंचायत बिल्हा ने देश में 20 हजार से कम आबादी वाले शहरों की श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त कर छत्तीसगढ़ को गौरवान्वित किया है। वहीं, स्वच्छ रिवर फ्रंट टाउन श्रेणी में छत्तीसगढ़ के बिलासपुर ने राष्ट्रीय स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। रायपुर नगर पालिक निगम को स्वच्छता में राज्य में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 के पुरस्कार वितरण समारोह में राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु के हाथों छत्तीसगढ़ के उप मुख्यमंत्री एवं नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री अरुण साव, विभाग के प्रमुख सचिव सोनमणि बोरा तथा संबंधित नगरीय निकाय के महापौरों एवं आयुक्तों ने राष्ट्रीय पुरस्कार ग्रहण किया। इस उपलब्धि से राष्ट्रीय स्तर पर छत्तीसगढ़ के नगरीय निकायों के स्वच्छता संबंधी प्रयासों को नई पहचान मिली है।



कार्यक्रम में केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य मंत्री मनोहर लाल खट्टर तथा केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य राज्य मंत्री तोखन साहू भी उपस्थित रहे। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने इस उपलब्धि पर प्रदेशवासियों, संबंधित नगरीय निकायों के जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों और स्वच्छता कर्मियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। श्री साय ने कहा कि स्वच्छ सर्वेक्षण में छत्तीसगढ़ को मिले राष्ट्रीय सम्मान हमारे शहरों की बदलती तस्वीर और स्वच्छता के प्रति प्रदेशवासियों की सामूहिक प्रतिबद्धता का प्रमाण हैं। बिल्हा जैसे छोटे नगर का देश में प्रथम स्थान प्राप्त करना, बिलासपुर का स्वच्छ नदी तटवर्तीय श्रेणी में राष्ट्रीय स्तर पर द्वितीय स्थान हासिल करना और रायपुर का राज्य में अग्रणी स्थान पर रहना पूरे छत्तीसगढ़ के लिए गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य केवल स्वच्छता की रैंकिंग में आगे बढ़ना नहीं, बल्कि ऐसी स्थायी व्यवस्था विकसित करना है, जिसमें स्वच्छता हर नागरिक की आदत और हर शहर की पहचान बने। जनभागीदारी, आधुनिक नगरीय सुविधाओं और प्रभावी प्रबंधन के माध्यम से हम स्वच्छ, स्वस्थ और विकसित छत्तीसगढ़ के संकल्प को साकार करने के लिए निरंतर प्रतिबद्ध हैं।

उप मुख्यमंत्री एवं नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री श्री अरुण साव ने इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर छत्तीसगढ़ के तीन नगरीय निकायों को सम्मानित किया जाना प्रदेश के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि यह सम्मान नगरीय निकायों के जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों, स्वच्छता कर्मियों और नागरिकों के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है। नगर पंचायत बिल्हा का 20 हजार से कम आबादी वाले शहरों की श्रेणी में राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करना विशेष उपलब्धि है। यह सम्मान दर्शाता है कि सीमित संसाधनों वाले छोटे नगरीय निकाय भी बेहतर प्रबंधन, स्वच्छता के प्रति प्रतिबद्धता और जनसहभागिता के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकते हैं।

छत्तीसगढ़ के तीन नगरीय निकायों का राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चयन राज्य में स्वच्छता व्यवस्था को बेहतर बनाने और नगरीय सेवाओं के सुदृढ़ीकरण की दिशा में किए जा रहे प्रयासों को रेखांकित करता है। स्वच्छ सर्वेक्षण के माध्यम से शहरों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता, नागरिक सहभागिता तथा नगरीय निकायों की कार्यप्रणाली को प्रोत्साहित किया जाता है।

समारोह में नगर पालिक निगम रायपुर की महापौर श्रीमती मीनल चौबे, नगर पालिक निगम बिलासपुर की महापौर श्रीमती पूजा विधानी तथा नगर पंचायत बिल्हा की अध्यक्ष श्रीमती वंदना जेंड्रे, राज्य शहरी विकास अभिकरण के मिशन डायरेक्टर एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी सुमीत अग्रवाल, आयुक्त नगर निगम रायपुर संबित मिश्रा, बिलासपुर आयुक्त प्रकाश कुमार सर्वे सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।



साहित्यकार व नाट्यकर्मी अबू तारिक दुबई में सम्मानित, छत्तीसगढ़ी संस्कृति का बढ़ाया मान

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति, परंपरा और माटी से जुड़ाव का दायरा सात समंदर पार दुबई तक फैल चुका है। इसी कड़ी में दुर्ग-भिलाई के जाने-माने वरिष्ठ साहित्यकार और नाट्यकर्मी मुहम्मद अबू तारिक को सपत्नीक दुबई में छत्तीसगढ़ स्थापना दिवस एवं दीवाली मिलन समारोह के दौरान सम्मानित किया गया। इस आयोजन ने विदेशों में रह रहे प्रवासियों को अपनी संस्कृति से जोड़े रखने का एक अनूठा उदाहरण पेश किया है।

नॉर्थ अमेरिकन छत्तीसगढ़ी एसोसिएशन 'नाचा' की यूएई इकाई के तत्वावधान में दुबई में छत्तीसगढ़ स्थापना दिवस और दिवाली मिलन समारोह आयोजित किया गया। इस भव्य आयोजन में नाचा-यूएई के अध्यक्ष अमित उपाध्याय के आमंत्रण पर भिलाई के प्रख्यात साहित्यकार एवं नाट्यकर्मी मुहम्मद अबू तारिक ने अपनी पत्नी के साथ खास तौर पर शिरकत की। उनके कला, साहित्य और नाट्य क्षेत्र में दिए गए बहुमूल्य योगदान को देखते हुए उन्हें इस आयोजन में सम्मानित किया गया, जिससे छत्तीसगढ़ और इस्पात नगरी भिलाई का नाम गौरवान्वित हुआ है। उल्लेखनीय है कि अमेरिका और कनाडा में रह रहे छत्तीसगढ़ी मूल के प्रवासियों (एनआरआई) के 'नाचा' का विस्तार दुनिया भर में हो रहा है और यूएई में भी 'नाचा' की इकाई सक्रिय है।

आयोजन में अबू तारिक को छत्तीसगढ़ी संस्कृति के प्रचार-प्रसार में उनके योगदान को देखते हुए सम्मानित किया गया। सेल की



इकाई भिलाई रीफ्रैक्टरीज प्लांट-बीआरपी (अब एसआरयू) से सेवानिवृत्त मुहम्मद अबू तारिक ने साहित्य और नाट्य कला में कई आयाम गढ़े हैं।

उन्होंने लगभग 25 नाटकों का लेखन, निर्देशन और अभिनय किया है। उनके प्रमुख साहित्यिक व नाट्य कार्यों में 'वर्तमान का अभिशाप', 'नर पिशाच', 'बंधुआ मजदूर' (जिसे 13 सम्मान मिले), बीएसपी की बहुभाषी नाटक प्रतियोगिता में 'जागृति' का मंचन, डी एन. शर्मा के साथ कुष्ठ रोग के विरुद्ध जागरूकता के लिए नाटक, सेवानिवृत्ति के अंतिम दिन तक बीआरपी में सुरक्षा आधारित नाटकों का सफल मंचन जारी रहा।

इसके अलावा शिमला, नागपुर, इलाहाबाद और दिल्ली आदि विभिन्न शहरों में भी अपनी नाट्य कला का प्रदर्शन किया है। दुर्ग जिले में साक्षरता अभियान के दौरान तीन साल तक गांव-गांव घूमकर नुक्कड़ नाटकों और गायन के माध्यम से साक्षरता का अलख जगाने में प्रमुख योगदान रहा। मुहम्मद अबू तारिक वर्तमान में उर्दू-हिंदी संस्था आईना-ए-अदब में अपनी सक्रिय सेवाएं दे रहे हैं। उनका निवास भिलाई नगर के कोहका क्षेत्र में है। दुबई में उनके पुत्र मो. अरशद का संस्था 'नाचा' से जुड़ाव है, जिनके माध्यम से इस सांस्कृतिक आयोजन में उनकी सक्रिय भागीदारी रही। इस गरिमामय आयोजन में लगभग 200 से अधिक प्रवासी छत्तीसगढ़ियों ने हिस्सा लिया। 'जय जोहार' और 'छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया' के उद्घोष से पूरा माहौल छत्तीसगढ़ मय हो गया।

खास खबर

दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर ने धूमधाम से मनाया भाई दूज का पावन पर्व



नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

भाई-बहन के अटूट प्रेम और स्नेह के प्रतीक पर्व भाई दूज के पावन अवसर पर दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर ने अपने बड़े भाई अशोक चंद्राकर एवं खुमेन्द्र चंद्राकर के साथ अपनी बड़ी बहन श्रीमती सुनंदा चंद्राकर एवं श्रीमती सरोज चंद्राकर के निवास स्थान पहुंचकर भाई दूज की रस्म पूरी की। इस अवसर पर बहनों ने विधि-विधानपूर्वक भाई की पूजा-अर्चना की। बहनों ने भाई के माथे पर तिलक लगाया, हाथ में रक्षा सूत्र बांधा, मिठाई खिलाकर मुंह मीठा कराया और नारियल भेंट कर भाई के दीर्घायु, सुख-समृद्धि एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

विधायक ललित चंद्राकर ने भी अपनी बहनों को उपहार भेंट कर उनका आशीर्वाद लिया और जीवनभर रक्षा का संकल्प लिया। इस दौरान पूरा वातावरण स्नेह, आत्मीयता और पारिवारिक प्रेम से सराबोर रहा। विधायक ने इस अवसर पर समस्त क्षेत्रवासियों एवं प्रदेशवासियों को भाई दूज पर्व की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भाई दूज का पर्व भाई-बहन के पवित्र रिश्ते को और मजबूत करता है। यह पर्व हमें एक-दूसरे के प्रति प्रेम, सम्मान और रक्षा के भाव को संजोकर रखने की प्रेरणा देता है। उन्होंने कामना की कि इस पावन पर्व पर सभी भाई-बहनों के जीवन में प्रेम, खुशहाली और समृद्धि बनी रहे।

शहर बना डंपिंग यार्ड,सिर्फ कागजी कोरम पूरा कर रहा नगर निगम प्रशासन - डॉ. प्रतीक उमरे

दुर्ग। दुर्ग नगर निगम के पूर्व एल्डरमैन भाजपा नेता डॉ. प्रतीक उमरे ने नगर निगम प्रशासन की घोर लापरवाही और लचर सफाई व्यवस्था को लेकर तीखा आक्रोश व्यक्त किया है। डॉ. प्रतीक उमरे ने कहा कि दीपावली बीत जाने के बाद भी दुर्ग शहर को कचरे के ढेर से मुक्ति नहीं मिल पाई है।शहर को साफ-सुथरा रखने के तमाम दावे पूरी तरह से खोखले और झूठे साबित हुए हैं। धरातल पर स्थिति यह है कि त्योहार खत्म होने के बाद शहर के वार्डों,मुख्य सड़कों और अंदरूनी मोहल्लों में कचरे का अंबार लगा हुआ है। डॉ. प्रतीक उमरे ने कहा कि दीपावली के चलते आम जनता ने अपने घरों, दुकानों और कार्यालयों की सफाई की थी,जिससे कचरे की मात्रा सामान्य दिनों से अधिक थी।नगर निगम प्रशासन की जिम्मेदारी थी कि त्योहार के तुरंत बाद अतिरिक्त मुस्तैदी दिखाकर त्वरित गति से कचरा उठाव सुनिश्चित करता।लेकिन इसके विपरीत निगम प्रशासन गहरी नींद में सोया हुआ है। आलम यह है कि हर तरफ पटाखे का बारूदी कचरा,जूठी प्लेटें,प्लास्टिक और सड़ा-गला वेस्ट बिखरा पड़ा है,जिससे पूरा शहर डंपिंग यार्ड में तब्दील हो चुका है। उन्होंने निगम की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल उठाते हुए कहा कि अधिकारियों की लापरवाही के कारण जनता अब अपने घरों का कचरा बाहर सड़कों पर फेंकने को मजबूर है। दुर्ग के अंदरूनी मोहल्लों की स्थिति तो बद से बदतर हो चुकी है। कुछ चुनिंदा जगहों पर नाममात्र की सफाई कर अधिकारी अपनी पीठ थपथपा रहे हैं और अपने काम की इतिश्री कर रहे हैं।जगह-जगह बिखरे इस कचरे के कारण जहां एक ओर शहर का पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है,वहीं दूसरी ओर संक्रामक बीमारियों के फैलने के खतरे की आशंका है। दुर्ग नगर निगम की सफाई व्यवस्था सिर्फ और सिर्फ कागजों तक सीमित रह गई है। अधिकारी सिर्फ कागजी कोरम पूरा करने और फाइलों में आंकड़े चमकाने में व्यस्त हैं,जबकि जमीन पर आम जनता गंदगी के बीच रहने को अभिशप्त है।

मातर तिहार हमारी आस्था और गौवंश के प्रति सम्मान का प्रतीक-मंत्री यादव

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

मातर तिहार के अवसर पर केबिनेट मंत्री एवं दुर्ग विधायक गजेन्द्र यादव ने आज दुर्ग स्थित सेवा सदन में विधि-विधान से गौमाता का पूजन-अर्चन कर प्रदेशवासियों के सुख, समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की। इस अवसर पर समाजजनों की उपस्थिति में पारंपरिक दोहा गाकर गौमाता को सोहाई बांधी तथा विधिवत पूजा-अर्चना कर लोकपर्व की परंपराओं का निर्वहन किये।

केबिनेट मंत्री गजेन्द्र यादव ने कहा कि मातर तिहार छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोकसंस्कृति, पारंपरिक मान्यताओं और गौवंश के प्रति हमारी श्रद्धा एवं सम्मान का प्रतीक है। हमारी संस्कृति में गौमाता का विशेष स्थान है। यह पर्व प्रकृति, कृषि और पशुधन के साथ हमारे गहरे जुड़ाव को दर्शाता है। पारंपरिक दोहा, सोहाई बांधने की रस्म और सामूहिक पूजा-अर्चना हमारी सदियों पुरानी लोकपरंपराओं की जीवंत पहचान हैं।

उन्होंने कहा कि ऐसे पारंपरिक लोकपर्व हमारी सांस्कृतिक विरासत को सहेजने के साथ ही नई पीढ़ी को अपनी जड़ों, परंपराओं और सामाजिक मूल्यों से जोड़ने का कार्य करते हैं। हमें अपनी लोकसंस्कृति और परंपराओं को पूरे उत्साह एवं श्रद्धा के साथ आगे बढ़ाना चाहिए। इस अवसर पर समाज के गणमान्यजन एवं श्रद्धालुजन उपस्थित रहे।

दुर्गवासियों के साथ साझा की दीपावली की खुशियां : दीपावली पर्व के उल्लास और छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोकपरंपराओं के बीच केबिनेट मंत्री एवं दुर्ग विधायक गजेन्द्र यादव दुर्ग विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर आयोजित गौरा-गौरी विसर्जन कार्यक्रमों में शामिल हुए।



उन्होंने कसारीडीह सिविल लाइन एवं डिपरापारा में आयोजित पारंपरिक गौरा-गौरी विसर्जन कार्यक्रम में सहभागिता कर पूजा-अर्चना की और श्रद्धालुओं का अभिवादन स्वीकार किये।

कसारीडीह सिविल लाइन से निकली पारंपरिक गौरा-गौरी विसर्जन यात्रा में शामिल होकर मंत्री श्री यादव ने क्षेत्रवासियों के साथ इस पावन पर्व की खुशियाँ साझा कीं। वहीं डिपरापारा में आयोजित गौरा-गौरी विसर्जन कार्यक्रम में पूजा-अर्चना कर लोक आस्था और परंपरा के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट किये। इस दौरान उन्होंने दुर्ग के परिवारजनों से भेंट-मुलाकात कर दीपावली की शुभकामनाएँ दीं और सभी से मुलाकात किये।

केबिनेट मंत्री गजेन्द्र यादव ने कहा कि गौरा-गौरी पर्व छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोकसंस्कृति, परंपरा और सामाजिक समरसता का प्रतीक है। ऐसे पारंपरिक आयोजन हमारी सांस्कृतिक विरासत को जीवंत रखने के साथ ही समाज में आपसी प्रेम, सद्भाव और भाईचारे को मजबूत करते हैं। दीपावली जैसे पर्व अपनों के बीच खुशियाँ बाँटने, बड़ों का आशीर्वाद लेने और समाज के हर वर्ग के साथ आत्मीयता से जुड़ने का अवसर प्रदान करते हैं।

केबिनेट मंत्री श्री यादव ने कहा कि दुर्ग की पहचान यहां की जीवंत सामाजिक परंपराओं, सांस्कृतिक आयोजनों और आपसी आत्मीयता से है। दीपावली के अवसर पर शहर के विभिन्न मोहल्लों में आयोजित गौरा-गौरी पर्व में लोगों का उत्साह, श्रद्धा और सहभागिता हमारी लोकसंस्कृति की मजबूती को दर्शाती है। जनप्रतिनिधि के रूप में ऐसे आयोजनों में शामिल होकर अपने परिवारजनों के बीच समय बिताना और उनकी खुशियों में सहभागी बनना उनके लिए सदैव विशेष अनुभूति का विषय है। उन्होंने कहा कि जनता का स्नेह, बड़ों का आशीर्वाद और क्षेत्रवासियों का विश्वास ही जनसेवा के संकल्प को निरंतर मजबूती प्रदान करता है।

गोवर्धन पूजा में शामिल हुए कांग्रेस नेता अरुण वोरा



नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

गोवर्धन पूजा के पावन अवसर पर दुर्ग शहर के वार्ड क्रमांक 54, पोटियाकला में उत्साह, उल्लास और लोकसंस्कृति का अनूठा संगम देखने को मिला। इस अवसर पर वरिष्ठ कांग्रेस नेता एवं दुर्ग शहर के पूर्व विधायक अरुण वोरा यादव समाज के बीच पहुंचे और पर्व की खुशियां साझा कीं। पारंपरिक राउत नाचा की मनमोहक धुनों के बीच अरुण वोरा भी स्वयं को थिरकने से रोक नहीं सके और लोकनृत्य में सहभागी बनकर उत्सव के उल्लास को और बढ़ा दिया।

मांदर और पारंपरिक वाद्ययंत्रों की थाप, राउत नाचा की रंगीन वेशभूषा तथा लोकगीतों से पूरा वातावरण छत्तीसगढ़ी संस्कृति के रंग में सराबोर नजर आया। अरुण वोरा ने समाजजनों के साथ राउत नाचा में हिस्सा लेकर यह संदेश दिया कि हमारी लोकपरंपराएं केवल देखने और सराहने की चीज नहीं, बल्कि इन्हें आत्मसात करना और अगली पीढ़ी तक पहुंचाना भी उतना ही आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ की पहचान यहां की लोककलाओं, परंपराओं और आपसी भाईचारे से है। ऐसे आयोजन समाज को अपनी जड़ों से जोड़ने के साथ ही हमारी सांस्कृतिक विरासत को जीवंत बनाए रखते हैं। उन्होंने यादव समाज सहित समस्त क्षेत्रवासियों को गोवर्धन पूजा की शुभकामनाएं देते हुए लोकपरंपराओं के संरक्षण और संवर्धन का आह्वान किया।

कसारीडीह के प्रशांति मंदिर पहुंचा श्री सत्य साई प्रेम प्रवाहिनी रथ, भक्तों ने किया स्वागत

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

भगवान श्री सत्य साई बाबा के जन्म शताब्दी वर्ष के पावन अवसर पर प्रेम, सद्भावना, आपसी भाईचारे और मानवीय मूल्यों के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से श्री सत्य साई प्रेम प्रवाहिनी रथ का कसारीडीह स्थित प्रशांति मंदिर में आगमन हुआ। इस अवसर पर मंदिर समिति के सभी साई भक्तों ने उत्साह और उल्लास के साथ रथ का आत्मीय स्वागत किया।

रथ के आगमन पर प्रशांति मंदिर में विशेष भजन-कीर्तन का आयोजन किया गया। साई भक्तों ने भक्तिमय वातावरण में भगवान श्री सत्य साई बाबा का स्मरण एवं गुणगान किया। कार्यक्रम के पश्चात श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरण किया गया। श्री सत्य साई प्रेम प्रवाहिनी रथ का मार्गदर्शन श्री सत्य साई सेवा संगठन



छत्तीसगढ़ के प्रांताध्यक्ष डॉ. टी. रामा राव द्वारा किया जा रहा है, वहीं रथ यात्रा का नेतृत्व समिति के जिला अध्यक्ष संदीप नायडू ने किया। इस पहल का उद्देश्य भगवान श्री सत्य साई बाबा के प्रेम, सेवा, सद्भावना, संस्कार और मानवीय मूल्यों के संदेश को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाना है।

इस अवसर पर प्रशांति मंदिर में समिति के राज्य शैक्षणिक प्रभारी देवेंद्र स्वाइन सहित आई.एल. साहू, आर.के. तिवारी, हरीश चंद ठाकुर, दिलीप ठाकुर, श्रीनिवास राव, सौरभ पांडे, नवीन त्रिपाठी, रंगदमन, एस.एन. बालुंजकर, अरविंद ठाकुर, देव कुमार साहू, वाई.के. चौधरी, सुखचंद साहू, रामनाथ साहू, संजय खानखोजे, के. आर. मुदलियार, पदुम निषाद, गौरव ठाकुर, शुभम राजपूत एवं तुषार साहू उपस्थित रहे।

महिला भक्तों में यमला साहू, सुशीला साहू, इंद्राणी मिश्रा, गायत्री ठाकुर, लता चौधरी, पल्लवी देशपांडे, अन्नपूर्णा राव, मीरा राजपूत, सरस्वती साहू, वी. सुहासिनी, पूजा साहू, मनीषा राजपूत एवं कृष्णा राव सहित अनेक साई भक्तों की गरिमामय उपस्थिति रही। सभी भक्तों ने आयोजन में सक्रिय सहभागिता निभाते हुए प्रेम, सेवा और सद्भावना के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया।

सूर्य विहार में दीवाली की रात उपद्रवियों का तांडव : कई घरों के शीशे टूटे, पाइप लाइन क्षतिग्रस्त होने से जलापूर्ति रही बाधित

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

तीन टावरों में जलापूर्ति ठप होने से 70 से अधिक लोग प्रभावित, सुरक्षा पर उठे गंभीर सवाल

दिवाली की रोशनी और उल्लास के बीच सूर्य विहार आवासीय परिसर में असामाजिक तत्वों द्वारा की गई बर्बरता और उपद्रव से पूरे क्षेत्र में सनसनी फैल गई है। त्योहार की रात हुए दोहरे हादसों और असामाजिक तत्वों की दबंगई की घटनाओं ने स्थानीय निवासियों को दहशत में डाल दिया है। सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने के साथ-साथ उपद्रवियों ने आम लोगों की सुरक्षा को भी ताक पर रख दिया, जिससे उत्सव का माहौल पल भर में डर और आक्रोश में बदल गया।

दीवाली की रात 8 नवंबर रविवार को लगभग 11 बजे सूर्य विहार टावर 3 ए और 4 बी के निकट चार उपद्रवियों ने दो बड़े पटाखा बमों को एक साथ जोड़कर भीषण विस्फोट किया। यह धमाका इतना तीव्र था कि मुख्य इमारत सहित आसपास की अन्य इमारतें दहल गईं। धमाके के जोर से कम से कम चार मकानों की खिड़कियों के कांच टूटकर बिखर गए, जबकि एक मकान का एग्जॉस्ट फैन पूरी तरह क्षतिग्रस्त होकर गिर पड़ा। घटना के तुरंत बाद परिसर की एक महिला ने बाहर निकलकर उपद्रवियों का विरोध किया और उन्हें फटकार लगाई, जिसके बाद आरोपी मौके से भाग निकले।



नशे में धुत आरोपियों की दोबारा दबंगई और खुलेआम धमकी

घटना के अगले दिन 9 नवंबर सोमवार की शाम करीब 6:30 बजे नशे की हालत में उपद्रवी एक बार फिर परिसर में दाखिल हुए। उस समय पार्किंग क्षेत्र में मौजूद वही महिला और एक अन्य निवासी ने जब उनसे कल की घटना को लेकर सवाल किया, तो आरोपी उलझ पड़े। उपद्रवियों ने अपनी हरकत पर शर्मिंदा होने के बजाय निवासियों को अंजाम भुगतने और इससे भी बड़ा नुकसान पहुंचाने की खुली धमकी दी और फरार हो गए। इस घटना के बाद से परिसर के निवासियों में अपनी सुरक्षा को लेकर गहरा डर बना हुआ है।

मुख्य पाइप लाइन पर विस्फोट से ओवरहेड टैंक खाली, 70 से अधिक लोग तरसे

उसी दौरान असामाजिक तत्वों ने सूर्य विहार टावर 9 ए, 9 बी और 9 सी की मुख्य जलापूर्ति लाइन पर पटाखा रखकर विस्फोट कर दिया। इस हमले में पाइपलाइन बुरी तरह फट गई और ओवरहेड टैंक में भरा सारा पानी बह गया। इसके चलते तीनों टावरों के 70 से अधिक लोग कई घंटों तक पेयजल के लिए तरसते रहे और पूरी जलापूर्ति ठप हो गई। स्थानीय लोगों का आरोप है कि 9 ए में आए कुछ तथाकथित संभ्रांत लोगों ने इस तरह की गैर-जिम्मेदाराना हरकत को अंजाम दिया है।

प्रशासन से सख्त कार्रवाई की मांग और भविष्य के लिए सुझाव दिए रहवासियों ने

घटना से आक्रोशित सूर्य विहार के निवासियों ने पुलिस प्रशासन से सीसीटीवी फुटेज खंगाल कर उपद्रवियों की त्वरित गिरफ्तारी और कड़ी कानूनी कार्रवाई की मांग की है। इसके साथ ही, ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए निवासियों और विशेषज्ञों ने एक 4-सूत्रीय नीति की वकालत की है। इसमें पटाखा निर्माण से जुड़े श्रमिकों को वैकल्पिक आजीविका देने, आम पटाखों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाकर केवल ग्रीन क्रैकर्स को अनुमति देने, पटाखों का वर्चुअल अनुभव देने वाले डिजिटल ऐप्स व सॉफ्टवेयर विकसित करने और दिवाली को केवल दीपों का पर्व मनाने के लिए व्यापक जन जागरूकता अभियान चलाने का सुझाव शामिल है।

टीईटी अनिवार्यः उम्रदराज शिक्षकों के सामने कंप्यूटर पर परीक्षा की चुनौती

दुर्ग संभाग के 17,346 शिक्षक देंगे परीक्षा



नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद बरसों से बच्चों को पढ़ा रहे शिक्षकों को अब खुद परीक्षार्थी बनना होगा। प्रदेश में जिन शिक्षकों की नौकरी में 5 साल या उससे अधिक समय बचा है, उनके लिए शिक्षक पात्रता परीक्षा पास करना अनिवार्य कर दिया गया है।

दुर्ग संभाग में 17,346 शिक्षक इसके दायरे में आ रहे हैं। इनमें दुर्ग जिले के 2,756, बालोद के 2,876, बेमेतरा के 2,945, राजनांदगांव के 2,776, खैरागढ़-छुईखदान-गंडई के 1,381, मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी के 862 और कबीरधाम जिले के 3,750 शिक्षक शामिल हैं।

सबसे बड़ी चुनौती 50-55 साल के उम्रदराज शिक्षकों के लिए है। वर्षों बाद फिर से किताबें उठाना और वह भी कागज पर नहीं, बल्कि कंप्यूटर पर परीक्षा देना। प्राइमरी और मिडिल के लिए 150-150 अंकों के अलग-अलग पेपर होंगे, 2.5 घंटे में 150 सवाल हल करने होंगे।

पहली परीक्षा दिसंबर 2026 से जनवरी 2027 के बीच प्रस्तावित है। शिक्षक संगठनों ने रडएफ्ज से अध्ययन सामग्री और अभ्यास टेस्ट की मांग की है।

सुपेला में धारदार हथियार लहराने वाले दो गिरफ्तार

भिलाई। सुपेला थाना क्षेत्र में सार्वजनिक स्थान पर धारदार हथियार लहराकर दहशत फैलाने के आरोप में पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

पुलिस के अनुसार राधिका नगर स्लाटर हाउस और जीई रोड स्थित हनुमान मंदिर के पास हथियार लहराने की सूचना मिली थी। मौके पर पहुंची टीम ने घेराबंदी कर गौतम नगर निवासी सलमान खान और लक्की सिंह को पकड़ा। उनके पास से लोहे के धारदार हथियार बरामद हुए हैं।

दोनों के खिलाफ आर्म्स एक्ट की धारा 25 और 27 के तहत कार्रवाई कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है।

मांदर की थाप पर थिरका लखनपुर, करमा महोत्सव में दिखी जनजातीय लोक संस्कृति की अनूठी छटा

पर्यटन और संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल ने कलाकारों के साथ किया करमा नृत्य, विजेता दलों को किया सम्मानित

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर-लखनपुर

जनजातीय लोक संस्कृति, परंपरा और कला के रंगों से बृधवार को लखनपुर का साक्षरता मिनी स्टेडियम सराबोर हो उठा। जनजातीय गौरव सप्ताह के अंतर्गत आयोजित ब्लॉक स्तरीय जनजातीय लोक नृत्य महोत्सव 'करमा महोत्सव' में पारंपरिक लोकगीतों और मांदर की गूंजती थाप ने ऐसा समां बांधा कि पूरा परिसर उत्साह और उमंग से झूम उठा। रंग-बिरंगे पारंपरिक परिधानों में सजे जनजातीय कलाकारों ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुतियों से दर्शकों का दिल जीत लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल ने भी कलाकारों के साथ करमा नृत्य में शामिल होकर जनजातीय संस्कृति के प्रति अपनी आत्मीयता और उत्साह का परिचय दिया।



कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल ने कहा कि जनजातीय समाज की लोककला, संस्कृति और परंपराएं छत्तीसगढ़ की अमूल्य धरोहर हैं। इन परंपराओं का संरक्षण करना और इन्हें नई पीढ़ी तक पहुंचाना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि करमा महोत्सव जैसे आयोजन जनजातीय कलाकारों को अपनी प्रतिभा और पारंपरिक कला का प्रदर्शन करने के लिए बेहतर मंच प्रदान करते हैं। साथ ही ऐसे आयोजनों से हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को नई पहचान मिलती है। उन्होंने सभी प्रतिभागी कलाकारों का उत्साहवर्धन करते हुए विजेता दलों को पुरस्कार प्रदान किए और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

12 नृत्य दलों ने बिखेरे लोक संस्कृति के रंग : महोत्सव में विकासखंड के तुरना, कोरजा, लोसगा और केवरा सेक्टरों से आए 12 नृत्य दलों ने अपनी लोककला का प्रदर्शन किया। करमा नृत्य प्रतियोगिता में जय शिव शारदा करमा पार्टी परसोदी कला ने प्रथम तथा आदिवासी करमा दल पीपरखार ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। वहीं शहीद वीर नारायण सिंह लोक कला महोत्सव के अंतर्गत आयोजित लोकनृत्य प्रतियोगिता में शैला पार्टी तराजू ने प्रथम स्थान हासिल किया। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले दल जिला स्तरीय प्रतियोगिता में लखनपुर विकासखंड का प्रतिनिधित्व करेंगे। करमा महोत्सव ने न केवल जनजातीय कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर दिया, बल्कि लोक संस्कृति, परंपरा और सामुदायिक एकता के महत्व को भी प्रभावशाली ढंग से सामने रखा। मांदर की थाप और करमा गीतों की गूंज के बीच संपन्न हुआ यह आयोजन जनजातीय गौरव और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की दिशा में एक यादगार पहल बनकर उभरा।

इस अवसर पर जनपद अध्यक्ष शशिकला विक्रम सिंह, नगर पंचायत अध्यक्ष सावित्री दिनेश साहू, एसडीएम रामराज सिंह, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत लखनपुर खुशबू शास्त्री, एसडीओ आरईएस, कार्यक्रम अधिकारी मनरेगा, आकांक्षी विकासखंड फेलो सहित अनेक जनप्रतिनिधि, अधिकारी-कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिक उपस्थित रहे।

खास खबर

लोईंग में स्वास्थ्य विभाग की टीम ने हेल्थ मेला शिविर का किया निरीक्षण, नशा मुक्ति केंद्र की सुविधाओं की दी जानकारी



नई दृष्टिबिंदु / रायपुर-रायगढ़

जिले में स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने और आम नागरिकों को विभिन्न स्वास्थ्य योजनाओं एवं सुविधाओं का लाभ पहुंचाने के साथ नशामुक्त समाज के निर्माण की दिशा में स्वास्थ्य विभाग द्वारा लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में जिला स्तरीय स्वास्थ्य विभाग की टीम ने विकासखंड लोईंग के ग्राम छुहीपाली स्थित हेल्थ मेला शिविर एवं आयुष्मान आरोग्य मंदिर कुकरदा का निरीक्षण किया। शिविर में 48 लोगों की गैर-संचारी रोग (एनसीडी) स्क्रीनिंग की गई, वहीं 10 परिवार नियोजन हितग्राहियों को काउंसलिंग प्रदान की गई। इसके अलावा फाइलेरिया (हाथीपांव) से पीड़ित एक मरीज का फॉलोअप भी किया गया।

कलेक्टर मयंक चतुर्वेदी के दिशा-निर्देशन तथा मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अनिल कुमार जगत एवं जिला कार्यक्रम प्रबंधक सुश्री रंजना पैंकरा के मार्गदर्शन में स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा लोईंग में संचालित विशेष नशा मुक्ति केंद्र के संबंध में भी आम नागरिकों को जानकारी दी गई। केंद्र का उद्देश्य युवाओं एवं स्थानीय लोगों को शराब, तंबाकू, सिगरेट और अन्य मादक पदार्थों के सेवन से होने वाले शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करना है। साथ ही नशे की लत से प्रभावित लोगों को इससे बाहर निकालने के लिए निःशुल्क परामर्श, उपचार एवं भर्ती की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है।

24 घंटे निःशुल्क उपचार के साथ 10 बिस्तरीय अस्पताल की सुविधा : लोईंग स्थित नशा मुक्ति केंद्र में 10 बिस्तरों की व्यवस्था के साथ 24 घंटे निःशुल्क उपचार की सुविधा उपलब्ध है। यहां मरीजों की देखभाल के लिए चिकित्सक, नर्सिंग स्टाफ एवं काउंसलर की व्यवस्था की गई है। नशे की लत से जूझ रहे व्यक्तियों के उपचार एवं पुनर्वास के लिए मेडिकल डिटॉक्सिफिकेशन, विशेषज्ञ चिकित्सकीय देखभाल, नियमित काउंसलिंग तथा मानसिक स्वास्थ्य संबंधी परामर्श प्रदान किया जाता है। इसके साथ ही मरीजों के बेहतर स्वास्थ्य एवं मानसिक संतुलन के लिए योग, ध्यान और व्यायाम कराया जाता है। उन्हें संतुलित एवं पौष्टिक आहार उपलब्ध कराने के साथ सुरक्षित, स्वच्छ और अनुकूल वातावरण भी दिया जाता है। मरीजों के साथ-साथ उनके परिजनों को भी गोपनीयता के साथ विशेषज्ञ परामर्श प्रदान किया जाता है, ताकि परिवार के सदस्य नशे की समस्या को समझकर मरीज के उपचार और पुनर्वास में सहयोग कर सकें। केंद्र से उपचार के बाद घर लौटने वाले मरीजों को दोबारा नशे की गिरफ्त में जाने से बचाने के लिए नियमित फॉलोअप एवं मार्गदर्शन की सुविधा भी दी जा रही है।

नशामुक्त समाज के निर्माण में जनभागीदारी जरूरी : स्वास्थ्य विभाग ने आम नागरिकों से अपील की है कि नशे को केवल व्यक्तिगत समस्या न समझें, क्योंकि इसका दुष्प्रभाव व्यक्ति के साथ उसके परिवार और पूरे समाज पर पड़ता है। विशेषकर युवा पीढ़ी को नशे से दूर रखना और उन्हें स्वस्थ एवं सुरक्षित भविष्य की ओर प्रेरित करना सामूहिक जिम्मेदारी है। सभी लोगों से आग्रह किया गया है कि वे नशामुक्ति जागरूकता अभियान में सक्रिय भागीदारी निभाएं तथा नशे की लत से प्रभावित व्यक्तियों को लोईंग स्थित नशा मुक्ति केंद्र तक पहुंचाने में सहयोग करें। यहां उपलब्ध निःशुल्क उपचार, परामर्श एवं पुनर्वास सुविधाओं का लाभ उठाकर नशे की गिरफ्त में आए लोगों को स्वस्थ जीवन की मुख्यधारा से जोड़ने में मदद करें।

जनजातीय लोक नृत्य और लोक कलाओं की प्रस्तुतियों से जीवंत हुई समृद्ध सांस्कृतिक गौरवशाली विरासत

सातों विकासखंडों के कर्मा नृत्य दलों ने दी आकर्षक प्रस्तुति, प्रतिभावान विद्यार्थियों का हुआ सम्मान

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर-रायगढ़

जनजातीय समाज की समृद्ध लोक संस्कृति, परंपरा और गौरवशाली विरासत को मंच प्रदान करने के उद्देश्य से आज रायगढ़ के संत पूज्य श्री प्रियदर्शी राम ऑडिटोरियम, पंजरी प्लांट में जिला स्तरीय उत्तर छत्तीसगढ़ क्षेत्र जनजातीय लोक नृत्य महोत्सव एवं शहीद वीर नारायण सिंह स्मृति आदिवासी लोक कला महोत्सव-2026 का भव्य आयोजन किया गया।



भारत सरकार के जनजातीय कार्य मंत्रालय के निर्देशानुसार जनजातीय गौरव दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित इस महोत्सव में जिले के सातों विकासखंडों से पहुंचे कलाकारों ने पारंपरिक लोक नृत्य एवं लोक कलाओं की मनमोहक प्रस्तुतियों से जनजातीय संस्कृति की विविधता और समृद्धि को प्रदर्शित किया। कार्यक्रम का शुभारंभ छत्तीसगढ़ महतारी, भगवान बिरसा मुंडा, शहीद वीर नारायण सिंह, वीरांगना रानी दुर्गावती सहित अन्य महापुरुषों के छायाचित्रों पर दीप प्रज्वलन एवं माल्यार्पण के साथ हुआ। इसके पश्चात राष्ट्रगीत एवं राज्यगीत का सामूहिक गायन किया गया।

संस्कृति और परंपराओं को सहेजना नई पीढ़ी की जिम्मेदारी: डॉ.भगत

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित सर्व आदिवासी समाज के सचिव डॉ. बाल किशोर भगत ने अपने उद्बोधन में कहा कि जनजातीय लोक नृत्य महोत्सव एवं शहीद वीर नारायण सिंह स्मृति आदिवासी लोक कला महोत्सव का आयोजन समाज के लिए अत्यंत गौरव और महत्व का विषय है। हमारी संस्कृति, संस्कार, नृत्य, बोली और भाषा अत्यंत समृद्ध हैं। इन परंपराओं को संरक्षित करना और नई पीढ़ी तक पहुंचाना हम सभी की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि आधुनिकता के दौर में आगे बढ़ना और उच्च शिक्षा प्राप्त कर अच्छे पदों पर पहुंचना जरूरी है, लेकिन इसके साथ अपनी जड़ों, संस्कृति और परंपराओं को कभी नहीं भूलना चाहिए। उन्होंने कहा कि आदिवासी समाज की असली पहचान उसकी संस्कृति, संस्कार, लोकगीत और लोकनृत्य हैं। लोकनृत्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि समाज की समृद्धि, एकजुटता और सांस्कृतिक पहचान को प्रदर्शित करने का सशक्त माध्यम है। छत्तीसगढ़ की 42 जनजातियों में अलग-अलग विशेषताएं और कलात्मक प्रतिभाएं हैं। आवश्यकता है कि सभी जनजातियां अपनी पारंपरिक कलाओं का प्रदर्शन करें, ताकि हमारी सांस्कृतिक विरासत और अधिक समृद्ध हो। उन्होंने कलाकारों को शुभकामनाएं देते हुए भविष्य में इस आयोजन को और अधिक भव्य स्वरूप देने का आह्वान किया।

नगर निगम रायगढ़ के सभापति श्री डिग्री लाल साहू ने जनजातीय समाज को जय जोहार करते हुए कहा कि जनजातीय समाज अपनी विशिष्ट लोक संस्कृति और परंपराओं के लिए जाना जाता है। किसी भी सांस्कृतिक आयोजन में जनजातीय कलाकारों की भागीदारी कार्यक्रम की शोभा बढ़ाती है। उन्होंने समाज में संगठन और एकजुटता बनाए रखने पर जोर देते हुए कहा कि एकजुटता से ही समाज की विकास यात्रा आगे बढ़ती है। उन्होंने राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु का उल्लेख करते हुए कहा कि जनजातीय समाज से अनेक व्यक्तित्व देश के महत्वपूर्ण पदों पर पहुंचे हैं। आगामी 15 नवंबर को पूरे देश के साथ छत्तीसगढ़ में भी जनजातीय गौरव दिवस भव्य रूप से मनाया जाएगा।

सातों विकासखंडों के कर्मा दलों ने दी आकर्षक प्रस्तुति, विजेताओं को मिले आकर्षक पुरस्कार

उत्तर छत्तीसगढ़ क्षेत्र जनजातीय लोक नृत्य महोत्सव के अंतर्गत जिले के सभी सातों विकासखंडों के कर्मा नृत्य दलों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। प्रत्येक दल को अपनी कला एवं सांस्कृतिक परंपरा के प्रदर्शन के लिए 15 मिनट का समय दिया गया। कलाकारों ने पारंपरिक वेशभूषा, लोक वाद्ययंत्रों और लयबद्ध नृत्य के माध्यम से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। जिसमें विकासखण्ड लैलूंगा के कर्मा लोक नृत्य दल मोहनीपुरी चंवरपुर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं घरघोड़ा के लोक नृत्य कर्मा पार्टी आमापाली (बहिरकेला) ने द्वितीय, धरमजयगढ़ के भंडारीपारा कर्मा पार्टी सिथरा ने तृतीय एवं विकासखण्ड तमनार के जय मां कर्मा सेनी कर्मा नृत्य मंडली ग्राम मौहापाली ने चतुर्थ स्थान प्राप्त हुआ। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले दल को 50 हजार रुपये, द्वितीय को 25 हजार रुपये, तृतीय को 15 हजार रुपये तथा चतुर्थ स्थान प्राप्त करने वाले दल को 10 हजार रुपये का पुरस्कार प्रदान किया गया।

इसी प्रकार शहीद वीर नारायण सिंह स्मृति आदिवासी लोक कला महोत्सव के अंतर्गत आयोजित जिला स्तरीय लोक कला नृत्य प्रतियोगिता में भी सातों विकासखंडों की टीमों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। जिसमें घरघोड़ा विकासखण्ड के आदि शक्ति कर्मा पार्टी कोटरीमाल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं लैलूंगा के कर्मा आदिवासी लोक नृत्य दल खेडआमा ने द्वितीय, धरमजयगढ़ के मां लक्ष्मी कर्मा पार्टी भुण्डीबहरी ने तृतीय, खरसिया के गेंड़ी नृत्य कर्मा पार्टी छिरपानी ने चतुर्थ एवं विकासखण्ड रायगढ़ के बसंत विश्वकर्मा दल डोंगीतराई पांचवे स्थान पर रहे। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले दल को 21 हजार रुपये, द्वितीय पुरस्कार 11 हजार रुपये तथा तृतीय पुरस्कार 5 हजार 100 रुपये प्रदान किया गया। दोनों प्रतियोगिताओं के माध्यम से स्थानीय कलाकारों को अपनी पारंपरिक कला और प्रतिभा प्रदर्शित करने का महत्वपूर्ण अवसर मिला।

प्रतिभावान विद्यार्थियों का सम्मान, जनजातीय विरासत के संरक्षण का लिया संकल्प

महोत्सव के दौरान जनजातीय समाज के प्रतिभावान विद्यार्थियों को मंचासीन अतिथियों द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। अतिथियों ने कहा कि जनजातीय समाज की सांस्कृतिक पहचान, लोक परंपराओं और गौरवशाली इतिहास को सहेजने के लिए ऐसे आयोजन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इससे न केवल स्थानीय कलाकारों को प्रोत्साहन मिलता है, बल्कि नई पीढ़ी भी अपनी पारंपरिक विरासत से जुड़ने के लिए प्रेरित होती है। इस अवसर पर जिला पंचायत सदस्य श्रीमती सुषमा खलखो, जनपद पंचायत रायगढ़ के उपाध्यक्ष रामश्याम डनसेना, सोहन चौधरी, जनपद पंचायत सदस्य श्रीमती शांता भगत एवं श्रीमती अंजू पटेल, अनुसूचित जनजाति आयोग के पूर्व अध्यक्ष तारा सिंह राठिया सहित विभिन्न समाज प्रमुख, जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। कार्यक्रम में स्वागत उद्बोधन का दायित्व श्रीमती धनेश्वरी सिदार ने निभाया, जबकि आभार प्रदर्शन अनुराग नामदेव द्वारा किया गया।

कार्यक्रम भूमिपूजन के साथ ही क्षेत्र के लोगों की वर्षों पुरानी मांग पूरी होने की दिशा में बड़ा कदम उठ गया

5.22 करोड़ के वृहद पुल का भूमिपूजन, बरसात में टूटता संपर्क अब होगा स्थायी





नई दृष्टिबिंदु / रायपुर-एमसीबी

एमसीबी जिला के मुकुंदपुर से बलसोत्ता को जोड़ने वाले बहुप्रतीक्षित वृहद पुल का भूमिपूजन बुधवार को कोड़िया नाला के पास संपन्न हुआ। पीएमजीएसवाई योजना के तहत बनने वाले इस 120 मीटर लंबे पुल पर 522.08 लाख रुपये खर्च होंगे।

भूमिपूजन के साथ ही क्षेत्र के लोगों की वर्षों पुरानी मांग पूरी होने की दिशा में बड़ा कदम उठ गया है। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश के कैबिनेट मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल शामिल हुए। उन्होंने भूमिपूजन कर निर्माण कार्य का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में जनपद पंचायत खड़गवां की अध्यक्ष श्याम बाई मरकाम, उपाध्यक्ष विरेन्द्र सिंह करियाम, जिला पंचायत सदस्य रामजीत लकड़ा और प्रिया मसराम, मुकुंदपुर सरपंच विजय सिंह और जनपद सदस्य सीतावंती भी उपस्थित रहीं। जिला प्रशासन और पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के अधिकारी, जनप्रतिनिधि और बड़ी संख्या में ग्रामीण भी कार्यक्रम में पहुंचे। बरसात में क्यों जरूरी है यह पुल मुकुंदपुर से बलसोत्ता मार्ग पर कोड़िया नाला बरसात में सबसे बड़ी बाधा बन जाता है।

स्कूली बच्चों, मरीजों, किसानों और रोज काम पर जाने वालों को घंटों इंतजार करना पड़ता था, कई बार लंबा चक्कर लगाना पड़ता था। नया पुल बनने के बाद यह समस्या स्थायी रूप से खत्म हो जाएगी। हर मौसम में निर्बाध आवागमन होगा। गांवों का संपर्क जिला मुख्यालय, बाजार, स्कूल और अस्पताल से और मजबूत होगा। किसानों को अपनी उपज मंडी तक पहुंचाने में भी आसानी होगी। और मुकुंदपुर, बलसोत्ता सहित आसपास के दर्जनों गांवों को सीधा लाभ मिलेगा। आपातकालीन स्थिति में एंबुलेंस और अन्य वाहनों की आवाजाही बिना रुके हो सकेगी। क्षेत्र में व्यापार, रोजगार और विकास की गतिविधियों को भी गति मिलेगी। ग्रामीणों ने भूमिपूजन पर खुशी जताई और कहा कि पुल बनने से उनका बरसात का संघर्ष खत्म होगा। प्रशासन ने निर्माण कार्य को गुणवत्ता और समय सीमा के साथ पूरा कराने का भरोसा दिलाया।

संपादकीय

बड़ा काम किया इसलिए बड़ा सम्मान किया पीएम मोदी ने

बस्तर की दीपावली इस बार खास रही क्योंकि दशकों के नक्सलवाद का अंधेरा खत्म हो चुका है और अब आने वाला समय विकास व शांति के दीपों से बस्तर के जगमगाने का है नक्सलवाद के अंधेरा कब खत्म होगा ।इस बात का इंतजार कई दशकों से बस्तर के लोगों को था एक सपना था जो बस्तर के लोगों के लगता था यह पूरा नहीं होगा क्योंकि सरकार आती जाती रही लेकिन नक्सलियों ने बस्तर को जो नर्क बना रखा था,उसे कोई बदल नहीं पा रहा था ।किसी को उम्मीद ही नहीं थी कि नक्सलियों का खात्मा हो सकता है,क्योंकि किसी ने कभी सोचा नहीं और सोचा नहीं इसलिए कहा भी नहीं कि नक्सलियों का सफाया हम कर सकते हैं मोदी सरकार आने के बाद पहली बार यह सुनने को मिला कि नक्सलियों का सफाया 31 मार्च 2026 तक कर दिया जाएगा और ऐसा करके भी दिखाया गया।

एक सवाल लोगों के मन में उठ सकता है कि मोदी सरकार तो 2014 में आ गई थी तो नक्सलियों के सफाए में 12 साल क्यों लग गए इसका जवाब है कि देश के सामने और भी कई बड़ी समस्याएं थी,कई वादे पूरे करने थे,सबसे बड़ी समस्या तो आंतकवाद की थी। आतंकवादी आते थे और देश के किसी भी शहर में बमविस्फोट कर भाग जाते थे, पूरे देश में आतंकवादियों की आंतक था,देश के लोग सुरक्षित महसूस नहीं करते थे,इसलिए मोदी सरकार ने सबसे पहले आतंकवाद का सफाया करने को ठाना और उसका सफाया कुछ सालों में ही कर दिया गया। इसके बाद सरकार ने नक्सलवाद सफाए के बारे में सोचा,योजना बनाई कि नक्सलियों का सफाया कैसे हो सकता है ।कई राज्यों में भाजपा की सरकार न होने से सफाए में दिक्कत आती थी,जैसे ही छत्तीसगढ़ सहित आसपास के राज्यों महाराष्ट्र, ओडिशा, आंध्र में भाजपा सरकार आई या भाजपा समर्थक सरकार आई तो नक्सलियों का सफाया आसान हुआ नक्सलियों के सफाए के बाद गृहमंत्री अमित शाह बस्तर आकर जा चुके हैं उन्होंने नक्सलियों के सफाए के लिए सभी का आभार माना है, उन्होंने माना कि यह एक सामूहिक प्रयास था, इसमें सुरक्षा बलों के जवानों,बस्तर के लोगों,साथ सरकार की बहुस्तरीय योजनाओं सभी का सहयोग रहा है।

नक्सलवाद के सफाए के बाद बस्तर अमित शाह आकर आभार मान ही चुके थे, सुरक्षा बलों की तारीफ कर उनका सम्मान किया था,उनका मनोबल बढ़ाया था, ऐसे में पीएम मोदी के बस्तर आकर दीपावली मनाने की कोई जरूरत नहीं थी ।अमित शाह ने बस्तर प्रवास के दौरान गौरव,संकल्प व सिध्दि की बात की थी मोदी सरकार संकल्प करती है तो संकल्प को पूरा करती है, यानी संकल्प की सिध्दि होती है ।जब संकल्प की सिध्दि होती है तो मोदी सरकार के लिए ही नहीं देश के लोगों के लिए गौरव का पल होता है । पीएम मोदी बस्तर के लोगों सहित देश के लोगों को यह संदेश देने आए थे कि हमारी सरकार ने नक्सलवाद के सफाए का संकल्प लिया,उसे सिध्द किया और आज देश के लोगों के लिए नक्सलवाद का सफाया गौरव का पल है ।ऐसे गौरव के पल में वह देश के लोगों के यह याद दिलाना नहीं भूले कि हथियारी नक्सली तो समाप्त कर दिए गए हैं लेकिन दिमागी नक्सली देश के लिए बड़ी चुनौती हैं क्योंकि यह कई संस्थाओं व राजनीतिक व गैरराजनीतिक संगठनों में घुस गए हैं,उस पर कब्जा कर चुके हैं और आए दिन देश में अराजकता फैलाने का प्रयास करते हैं ।उनसे सरकार तब ही निपट सकती है जब देश के जनता उनको पहचाने, उनसे सजग रहे, उनके प्रयासों को फेल कर दे।

बस्तर में पीएम मोदी दीपावली के मौके पर आए। वैसे वह हर साल दीपावली का पर्व सेना के जवानों के साथ मनाते रहे हैं, इस बार दीपावली के मौके पर सेना के बीच रक्षामंत्री राजनाथ सिंह गए थे और लोगों के मन में सवाल था की पीएम मोदी इस बार सेना के बीच क्यों नहीं गए दीपावली मनाने तो पीएम मोदी से पहले से तय कर रखा था इसबार वह दीपावली सुरक्षा बलों के जवानों के बीच बस्तर में मनाएंगे क्योंकि वह देश की आंतरिक सुरक्षा करते है, वह भी सेना के जवानों से कम नहीं है। पीएम मोदी ने सुरक्षा बलों के जवानों के बीच यह संदेश दिया है कि आप भी हमारे लिए सेना के जवानों से कम नही है । यह सुरक्षा बलों का अब तक का सबसे बड़ा सम्मान है जो पीएम मोदी ने किया है। सुरक्षा बलों ने बड़ा काम किया है,ऐतिहासिक काम किया है इसलिए उनका ऐतिहासिक सम्मान जरूरी था और पीएम मोदी ने बस्तर आकर यही किया है।

पशुओं ने भेद भुला दिए, मनुष्य कब सीखेगा साथ जीना ?

आचार्य डॉ. अजय आर्य, प्रख्यात वैदिक विचारक, लेखक व समाजसेवी



कभी-कभी जीवन के सबसे बड़े दर्शन किसी विश्वविद्यालय के व्याख्यान कक्ष में नहीं, बल्कि प्रकृति की किसी छोटी-सी घटना में मिल जाते हैं। कोई पुस्तक हमें जो बात कई अध्याय पढ़कर नहीं समझा पाती, वह किसी मूक प्राणी का सहज व्यवहार कुछ क्षणों में समझा देता है। परसों मैं अपनी पत्नी प्रोफेसर मोनिका आर्य और बेटे अक्षत के साथ गोकुल नगर, पुलगांव स्थित राधे कृष्ण गौशाला पहुंचा। वहां एक कुतिया बिल्ली के छोटे-छोटे बच्चों को अपना दूध पिला रही थी। मैं कुछ देर तक उस दृश्य को देखता रहा और मन में एक ही प्रश्न उठता रहा - जब एक पशु दूसरे पशु की जाति, वर्ग और प्रजाति का भेद भुलाकर उसके साथ रह सकता है, उसकी आवश्यकता समझ सकता है और उसकी सहायता कर सकता है, तो मनुष्य ऐसा क्यों नहीं कर सकता?



पशुओं ने अपने भेद भुलाकर साथ रहना सीख लिया, लेकिन मनुष्य जाति, धर्म, भाषा, संस्कृति, परंपरा, वेशभूषा और रहन-सहन के भेदों में उलझकर रह गया है।

दरअसल, हम लोग परिवार सहित प्रायः प्रतिवर्ष छत्तागढ़ स्थित गौशाला जाते हैं। वहां गौसेवा के साथ एक मंदिर में दर्शन और उसके आगे से बहती शिवनाथ नदी के मनोरम तट पर कुछ समय बिताने का अवसर भी मिलता है। इस बार सोचा कि अपनी नियमित दिनचर्या में थोड़ा परिवर्तन किया जाए और पुलगांव की राधे कृष्ण गौशाला का भ्रमण किया जाए।

घर से निकलते समय मन में एक छोटा-सा संकल्प था कि गायों के लिए 11 या 21 किलो गुड़ खरीदकर ले जाएंगे। सोचा था कि गोमाता को गुड़ खिलाकर सेवा का आनंद भी ले लेंगे। लेकिन रास्ते में जिस दुकान से गुड़ खरीदना था, वह बंद मिली। अब दुकानदार को क्या पता कि कोई परिवार उसके खुलने की प्रतीक्षा में गौसेवा का संकल्प लेकर निकला है! गुड़ खरीदने की योजना तो स्थगित हो गई, लेकिन गौशाला जाने का उत्साह बना रहा।

वहां पहुंचकर गौशाला की देखरेख करने वाली गायत्री जी से बातचीत हुई। उनका सेवाभाव, सरलता और समर्पण मन को बहुत प्रभावित करने वाला था। जानकारी मिली कि राजस्थान के कुछ लोग भी वहां नियमित रूप से कुट्टी आदि दान करने आते हैं। कुछ ग्रामीण लोगों से भी बातचीत हुई। गायत्री जी ने एक बहुत अच्छी सहयोग योजना बताई। उनका कहना था कि कोई व्यक्ति प्रतिदिन सुबह 10 रुपये और शाम को 10 रुपये अर्थात कुल 20 रुपये प्रतिदिन देकर लगभग 600 रुपये मासिक सहयोग के संकल्प से एक गाय के पालन-पोषण में सहभागी बन सकता है। मुझे यह विचार बहुत अच्छा लगा। सेवा के लिए यह आवश्यक नहीं कि किसी के पास बहुत अधिक धन हो, आवश्यक यह है कि उसके भीतर कुछ करने का संकल्प हो। प्रतिदिन के 20 रुपये भी किसी गोवंश के जीवन और पालन-पोषण में सहयोगी बन सकते हैं। हमारे समूह में भी कोई इच्छुक व्यक्ति इस संकल्प से जुड़ सकता है।

गौशाला में लगभग 350 गोवंश की सेवा की जाती है। लेकिन वहां केवल गायें ही नहीं थीं। कुत्ते, बिल्लियां, बत्तखें, बंदर और खरगोश भी दिखाई दिए। सभी पशु-पक्षियों की अपनी अलग कहानी थी। जानकारी मिली कि वहां कई पशुओं को विपरीत परिस्थितियों से बचाकर लाया गया है। कुछ कुत्तों को उनके मालिकों ने पालने में असमर्थ होने के कारण जहर दे दिया था। वे सड़क पर तड़प रहे थे। संवेदनशील लोगों ने उनका रेस्क्यू किया और उन्हें यहां आश्रय दिया।

जिन्हें कभी उनके अपने लोगों ने मरने के लिए छोड़ दिया था, उन्हें यहां अनजान लोगों ने जीवन दे दिया। सोचिए, किसी के लिए घर का दरवाजा बंद कर देना कितना आसान है और किसी बेसहारा के लिए अपने घर का दरवाजा खोल देना कितनी बड़ी मनुष्यता है!

इस यात्रा में एक और सुंदर पक्ष मेरे बेटे अक्षत से जुड़ा था। गौशाला का वातावरण उसके लिए किसी बाल उद्यान से कम नहीं था। वहां उसे ऐसा बालसुलभ सुख और आनंद मिला कि खेलते-खेलते वह कई बार हमारी आंखों से ओझल हो जाता। कभी खरगोशों के साथ खेलने में मग्न हो जाता, कभी बत्तखों के पीछे दौड़ता और कभी बिल्ली के नन्हे बच्चों को गोद में लेकर उनसे खेलने लगता। उसकी उत्सुकता और प्रसन्नता देखते ही बनती थी। बच्चों की दुनिया कितनी सरल होती है! उन्हें न किसी की जाति से मतलब होता है, न वर्ग से, न प्रतिष्ठा से। उन्हें तो बस एक नया मित्र चाहिए, जिसके साथ कुछ देर खेल सकें। अक्षत को उन पशु-पक्षियों के बीच खेलते देखकर लगा कि बच्चों के भीतर स्वाभाविक रूप से जो सहज अपनापन होता है, उसे बड़े होते-होते हम अपनी सामाजिक धारणाओं और भेदभाव से कहीं न कहीं खो देते हैं। शायद हमें बच्चों से भी फिर से सहज होना सीखना चाहिए।

लेकिन इस पूरी यात्रा का सबसे अनमोल दृश्य वह कुतिया और बिल्ली के बच्चे थे। सामान्यतः हमारी कहानियों में कुत्ते और बिल्ली को एक-दूसरे का विरोधी बताया जाता है। बच्चों को भी बचपन से यही सुनाया जाता है कि बिल्ली को देखते ही कुत्ता उसके पीछे दौड़ पड़ता है। लेकिन यहां तो कहानी ही उलटी थी। एक कुतिया बिल्ली के बच्चों को दूध पिला रही थी।

न कोई जातिगत प्रमाणपत्र मांगा गया, न किसी वर्ग का परिचय पूछा गया, न कोई पुराना विवाद सामने आया और न ही यह प्रश्न उठा कि तुम किस प्रजाति के हो! कुतिया ने केवल इतना महसूस किया कि इन नन्हे बच्चों को दूध की आवश्यकता है। उसने उन्हें अपना लिया।

मनुष्य जहां सहायता करने से पहले जाति, धर्म, वर्ग और परिचय पूछता है, वहां उस कुतिया ने केवल जरूरत पहचानी और ममता लुटा दी। हमारे शास्त्रों में भी मातृत्व को व्यापक सम्मान दिया गया है। पांच माताओं का उल्लेख करते हुए एक प्रचलित श्लोक है -

राजपत्नी गुरोः पत्नी मित्रपत्नी तथैव च।
पत्नीमाता स्वमाता च पञ्चैता मातरः स्मृताः॥

अर्थात राजा की पत्नी, गुरु की पत्नी, मित्र की पत्नी, अपनी पत्नी की माता और अपनी जन्मदात्री माता - ये पांच माताएं मानी गई हैं। इन सभी के प्रति मातृत्व सम्मान का भाव रखना चाहिए। इसी प्रकार सात माताओं का एक अन्य प्रचलित श्लोक भी है -

आदौ माता गुरोः पत्नी ब्राह्मणी राजपत्नीका।
धेनुर्धात्री तथा पृथ्वी सप्तैता मातरः स्मृताः॥

अर्थात जन्म देने वाली माता, गुरु की पत्नी, ब्राह्मणी, राजा की पत्नी, गाय, धात्री अर्थात पालन-पोषण करने वाली स्त्री और पृथ्वी - ये सात माताएं मानी गई हैं।

इन श्लोकों में मातृत्व के प्रति सम्मान का भाव है। लेकिन पुलगांव की उस गौशाला में मैंने मातृत्व का एक ऐसा व्यावहारिक रूप देखा, जिसने इन शास्त्रीय भावनाओं को और व्यापक बना दिया। एक कुतिया बिल्ली के बच्चों को दूध पिला रही थी। उसने न तो बच्चों को जन्म दिया था और न ही वे उसकी प्रजाति के थे। फिर भी उसने उनके प्रति मां का दायित्व निभाया। मां होने का अर्थ केवल जन्म देना नहीं, बल्कि किसी जरूरतमंद बच्चे के जीवन का सहारा बनना भी है। उस दृश्य ने मुझे सोचने पर विवश कर दिया कि यदि पशुओं में इतना सहज सामंजस्य संभव है तो मनुष्य के समाज में इतनी कटुता क्यों है? हम जाति, पाति, धर्म, भाषा, रंग, वर्ण, वर्ग, आर्थिक स्थिति, संस्कृति, परंपरा, वेशभूषा और रहन-सहन के आधार पर कितने विभाजन कर लेते हैं। अपनी-अपनी पहचान को इतना बड़ा बना लेते हैं कि दूसरे मनुष्य की पीड़ा छोटी दिखाई देने लगती है।

गौशाला में मेरा बेटा अक्षत बत्तखों के एक दल के पीछे-पीछे घूम रहा था। अचानक बत्तखें गायों के एक बड़े समूह के बीच जा पहुंचीं। गायों की संख्या और उनकी भनी उपस्थिति देखकर मुझे चिंता हुई कि कहीं किसी गाय का पैर किसी बत्तख पर न पड़ जाए। लेकिन आश्चर्य हुआ कि बत्तखें वहां सहजता से विचरण करती रहीं और गायों ने भी ऐसा संयम बनाए रखा कि किसी को चोट नहीं पहुंची।

मैं यह देखकर सोच रहा था कि इन पशुओं ने एक-दूसरे के साथ रहने का कितना अच्छा तरीका सीख लिया है। उन्हें मालूम है कि इस साझा स्थान में सबका अपना अस्तित्व है। कोई किसी को हटाने या डराने की कोशिश नहीं कर रहा था। न कोई अपने आकार का अहंकार दिखा रहा था और न कोई दूसरे की उपस्थिति से असहज हो रहा था। सह-अस्तित्व का अर्थ एक जैसा होना नहीं, बल्कि अलग-अलग होते हुए भी एक-दूसरे के अस्तित्व को स्वीकार करना है। इस प्रसंग ने मुझे समाज शब्द के वास्तविक अर्थ पर भी विचार करने के लिए प्रेरित किया। एक बार व्याकरण शास्त्र की चर्चा में मैंने कहा था कि समाज मुख्यतः मनुष्यों के समूह को कहा जाता है। लेकिन इस गौशाला में पहुंचकर मुझे अपनी धारणा पर पुनर्विचार करना पड़ा। यदि समाज का आधार परस्पर सहयोग, सामंजस्य, सुरक्षा और एक-दूसरे के प्रति संवेदनशीलता है तो इन पशुओं का व्यवहार भी सामाजिकता की एक सुंदर मिसाल प्रस्तुत कर रहा था।

यहां कुतिया बिल्ली के बच्चों को दूध पिला रही थी, गायों के बीच बत्तखें सुरक्षित विचरण कर रही थीं और अनेक पशु एक ही परिसर में बिना किसी भेदभाव के रह रहे थे। मुझे लगा कि इन मूक प्राणियों ने समाजशास्त्र की कोई पुस्तक पढ़े बिना ही सामाजिक जीवन का वह अध्याय आत्मसात कर लिया है, जिसे पढ़ने के बाद भी मनुष्य कई बार व्यवहार में नहीं उतार पाता। हमारा सामाजिक होना केवल एक-दूसरे के साथ रहना नहीं, बल्कि एक-दूसरे के सुख-दुख और आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होना है।

गौशाला के आसपास का प्राकृतिक परिवेश भी ध्यान आकर्षित करता है। वहां बगल में एक तालाब है, लेकिन वह पूरी तरह जलकुंभी से ढका हुआ दिखाई दिया। दूर से देखने पर ऐसा लग रहा था मानो वहां कोई तालाब नहीं, बल्कि हरा-भरा मैदान हो। जलकुंभी ने पूरे जलक्षेत्र को इस तरह ढक रखा था कि पानी का वास्तविक स्वरूप ही दिखाई नहीं दे रहा था। मन में विचार आया कि प्रकृति ने हमें इतने सुंदर जलस्रोत दिए हैं, लेकिन हमारी उपेक्षा के कारण वे धीरे-धीरे अपनी पहचान खोते जा रहे हैं। तालाब का अस्तित्व केवल पानी होने से नहीं, बल्कि उसके स्वच्छ और जीवंत बने रहने से है।

मैं इस क्षेत्र के महापौर और बड़े अधिकारियों से विनम्र निवेदन करना चाहूंगा कि जिनके उनके साथ संपर्क हैं, वे इस विषय को उनके संज्ञान में लाएं। संबंधित जनप्रतिनिधियों और प्रशासनिक अधिकारियों से आग्रह है कि इस तालाब को जलकुंभी से मुक्त कराने के लिए आवश्यक प्रयास किए जाएं। इससे न केवल तालाब का प्राकृतिक स्वरूप लौटेगा, बल्कि आसपास के पर्यावरण और जलीय जीवन को भी लाभ मिलेगा। गौसेवा के साथ जल और प्रकृति की रक्षा भी हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। इस बात को समझने के लिए अपने आसपास की छोटी-छोटी घटनाओं पर ही दृष्टि डाल लीजिए। दीपावली के अवसर पर मैं अपनी एक प्रतिष्ठित कॉलोनी के प्रतिष्ठित परिसर से गुजर रहा था। घरों की साफ-सफाई और सजावट का दौर चल रहा था। एक स्थान पर देखा कि कुछ लोगों ने अपने घर की सफाई से निकला कचरा किसी दूसरे व्यक्ति के घर के सामने डाल दिया था। आसपास भी कचरे का ढेर लगा हुआ था।

मैं कुछ क्षण के लिए रुककर सोचने लगा कि यह कैसी सफाई है? अपने घर को स्वच्छ बनाने के लिए दूसरे के घर के सामने गंदगी जमा कर देना! अपने आंगन को चमकाने के लिए पड़ोसी के दरवाजे पर कचरा पहुंचा देना! क्या यही सामाजिकता है? यदि मेरी सफाई किसी दूसरे की गंदगी बन रही है तो वह सफाई नहीं, स्वार्थ का एक नया रूप है। मजेदार बात यह है कि हम अपने घर की सफाई के लिए तो झाड़ू उठा लेते हैं, लेकिन अपने व्यवहार की सफाई के लिए कभी तैयार नहीं होते। घर के कोने-कोने से धूल निकाल देते हैं, लेकिन मन के भीतर जमा स्वार्थ, अहंकार और असंवेदनशीलता को जस का तस रहने देते हैं। दीपावली पर घर के बाहर दीपक जलाना अच्छा है, लेकिन पड़ोसी के दरवाजे पर कचरे का अंधेरा फैलाना किस प्रकार की रोशनी है?

यह कोई बहुत बड़ी घटना नहीं थी, लेकिन ऐसी छोटी-छोटी घटनाएं हमारे सामाजिक चरित्र का परिचय देती हैं। हम चाहते हैं कि हमारा घर साफ रहे, हमारी गली सुंदर रहे, हमारे आसपास सुविधाएं हों, लेकिन यह भूल जाते हैं कि हमारे आसपास रहने वाला व्यक्ति भी हमारी ही तरह सम्मान और सुविधा का अधिकारी है। सामाजिकता का अर्थ केवल यह नहीं कि हम अपने घर में सुखी रहें, बल्कि यह भी है कि हमारे कारण किसी दूसरे को अनावश्यक परेशानी न हो। एक और बात है जिस पर आज के समाज को गंभीरता से विचार करना चाहिए। आजकल अनेक लोगों के व्यक्तित्व में एक अजीब-सी आत्मनिर्भरता दिखाई देती है। वे अपना दुख किसी से साझा नहीं करना चाहते, किसी से सहायता लेना पसंद नहीं करते। उन्हें लगता है कि यदि हमने किसी की मदद ले ली तो हमारी प्रतिष्ठा कम हो जाएगी या हम छोटे हो जाएंगे। यह कैसी मानसिकता है? क्या सहायता लेना कमजोरी है? क्या किसी के सामने अपनी परेशानी बता देना आत्मसम्मान के विरुद्ध है? मुझे तो लगता है कि यह हमारे अहंकार का एक नया संस्करण है।

सहयोग करना जितना बड़ा गुण है, उतना ही बड़ा गुण आवश्यकता पड़ने पर सहयोग स्वीकार करना भी है।

आज मैं किसी की मदद कर रहा हूं, कल मुझे उसकी जरूरत पड़ सकती है। आज किसी के कठिन समय में मैं उसके साथ खड़ा हूं, कल मेरे कठिन समय में कोई दूसरा मेरे साथ खड़ा हो सकता है। जीवन में कोई हमेशा बड़ा नहीं रहता और कोई हमेशा छोटा नहीं रहता। परिस्थितियां बदलती रहती हैं। इसलिए सहायता देने और लेने के बीच अहंकार की दीवार खड़ी करना उचित नहीं है। हम सब बराबर हैं। किसी की आर्थिक स्थिति अच्छी है तो किसी की कमजोर, किसी के पास अनुभव अधिक है तो किसी के पास श्रम की क्षमता अधिक। किसी के पास समय है तो किसी के पास संसाधन। हमें अपनी-अपनी क्षमताओं के अनुसार एक-दूसरे के काम आना चाहिए। किसी की सहायता करने समय यह मत सोचिए कि वह किस जाति, धर्म या वर्ग का है और सहायता लेते समय यह मत सोचिए कि आप किसी से छोटे हो जाएंगे।

समाज का वास्तविक सौंदर्य तभी प्रकट होता है जब हम एक-दूसरे के दुख में सहभागी बनते हैं, आवश्यकता पड़ने पर हाथ बढ़ाते हैं और अपनी सामर्थ्य के अनुसार किसी के साथ खड़े होते हैं। कभी किसी को आर्थिक सहयोग चाहिए, कभी किसी को दो मीठे शब्दों की आवश्यकता होती है, कभी किसी को मार्गदर्शन चाहिए और कभी किसी को केवल इतना भरोसा चाहिए कि वह अकेला नहीं है। सहयोग का अर्थ हमेशा धन देना नहीं होता। किसी की बात धैर्य से सुन लेना, किसी के काम में हाथ बंटा देना, किसी की अनुपस्थिति में उसके परिवार का ध्यान रख लेना, किसी जरूरतमंद को सही रास्ता बता देना और किसी निराश व्यक्ति को हौसला देना भी सहयोग ही है।

जिस समाज में लोग एक-दूसरे की टांग खींचने के बजाय एक-दूसरे को संभालना सीख जाते हैं, वहां किसान केवल इमारतों का नहीं, मनुष्यता का भी होता है।

गौशाला से लौटते समय हम तीनों ने गायत्री जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए गौशाला हेतु अपनी ओर से एक छोटी-सी राशि भेंट की और उन्हें मिठाई का एक डिब्बा भी दिया। यह कोई बहुत बड़ा योगदान नहीं था, बल्कि उनके सेवाभाव के प्रति हमारी ओर से एक छोटा-सा सम्मान और आभार था। उनके समर्पण को देखकर मन में यही भाव आया कि जो लोग अपना समय, श्रम और जीवन बेजुबान प्राणियों की सेवा में लगा देते हैं, उनके प्रति कृतज्ञ होना हमारा दायित्व है।

सेवा का कोई मूल्य नहीं होता, क्योंकि सेवा धन से नहीं, मन से होती है। श्रद्धा, संवेदना और समर्पण का भाव ही सेवा को सार्थक बनाता है। धन तो केवल सहयोग का एक माध्यम है। सेवा का वास्तविक मूल्य उस भावना में है, जिसके कारण कोई व्यक्ति बिना किसी स्वार्थ के दूसरे के जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास करता है। गौशाला की उस कुतिया ने मुझे यही समझाया। उसने बिल्ली के बच्चों को अपना दूध पिलाते समय यह नहीं सोचा कि वे उसके अपने हैं या पराए। गायों ने बत्तखों के बीच अपनी विशालता का अहंकार नहीं दिखाया। अक्षत ने पशु-पक्षियों के साथ खेलते हुए किसी भेद की चिंता नहीं की और गायत्री जी ने अपने सेवाभाव से बताया कि समर्पण का वास्तविक अर्थ क्या है।

और हम हैं कि कभी जाति के नाम पर, कभी धर्म के नाम पर, कभी भाषा और संस्कृति के नाम पर, कभी धन के नाम पर और कभी प्रतिष्ठा के नाम पर एक-दूसरे से दूरी बना लेते हैं। मैं यह नहीं कहता कि पशुओं में कोई संघर्ष नहीं होता या उनका संसार पूरी तरह आदर्श है। लेकिन उस गौशाला में जो दृश्य मैंने देखा, उसने मनुष्य के सामने एक महत्वपूर्ण प्रश्न जरूर खड़ा कर दिया है। यदि एक कुतिया बिल्ली के बच्चों को अपना दूध पिला सकती है, यदि गायें बत्तखों के साथ सहज रह सकती हैं, यदि अलग-अलग प्रजातियों के पशु एक-दूसरे के अस्तित्व को स्वीकार कर सकते हैं, तो मनुष्य अपनी जाति, धर्म, भाषा, संस्कृति, परंपरा, वेशभूषा और वर्ग के भेद से ऊपर क्यों नहीं उठ सकता?

मुझे लगता है कि जीवन का सबसे बड़ा संस्कार यही है कि हम अपने भीतर संवेदना को जीवित रखें। किसी को पराया मानने से पहले उसके दुख को समझें। किसी की मदद करने से पहले उसकी पहचान नहीं, उसकी आवश्यकता देखें। अपनी सुविधा के लिए दूसरे को असुविधा में न डालें और आवश्यकता पड़ने पर बिना संकोच दूसरों का सहयोग भी स्वीकार करें। उस दिन पुलगांव की गौशाला में मैं केवल गोवंश के दर्शन करके नहीं लौटा। मैं एक कुतिया से मातृत्व, बत्तखों से निर्भयता, गायों से सह-अस्तित्व, गायत्री जी से सेवा, मोनिका जी के साथ पारिवारिक सहभागिता और अक्षत के बालसुलभ आनंद से सहज अपनापन सीखकर लौटा। ममता की कोई जाति नहीं होती, करुणा का कोई धर्म नहीं होता और सहयोग का कोई वर्ग नहीं होता।

मनुष्य होने का अर्थ केवल दो पैरों पर चलना या बुद्धि का उपयोग करना नहीं है। मनुष्य होने का अर्थ है - दूसरे के दुख को महसूस करना, उसकी सहायता के लिए आगे आना और इस संसार को सबके लिए थोड़ा अधिक सुंदर बनाना। आइए, हम ऐसा समाज बनाएं जहां कोई किसी की जाति न पूछे, कोई किसी को छोटा न समझे, कोई किसी के हिस्से का सम्मान न छीने और कोई जरूरतमंद सहायता मांगने में संकोच न करे। क्योंकि मनुष्यता की असली पहचान यह नहीं कि हम अपने लिए कितना जीते हैं, बल्कि यह है कि हम दूसरों के लिए कितना जी पाते हैं।

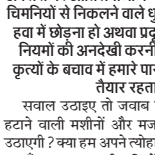
गर्म होती दुनिया

आज पूरी दुनिया ग्लोबल वार्मिंग के गंभीर प्रभावों का त्रास झेल रही है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, सूखा और चक्रवात के बढ़ते क्रम हमारे समय का यथार्थ हैं। यह साल तापमान वृद्धि के सभी रिकार्ड तोड़ने की दृष्टि से भी अत्यंत गर्म साबित हो रहा है। विश्व मौसम विज्ञान संगठन की ताजा रिपोर्ट के अनुसार साल 2026 उपलब्ध मौसम इतिहास के सबसे चार गर्म वर्षों में शुमार है। इस साल सितंबर तक का वैश्विक औसत तापमान पूर्व औद्योगिक काल के मुकाबले 1.47 डिग्री सेल्सियस अधिक दर्ज हुआ है। इस अप्रत्याशित तापमान वृद्धि की वजह ह्यअलनीनोह्न असर कहा जा रहा है, जिसके दिसंबर तक चरम पर पहुंचने की आशंका है। निस्संदेह दुनिया में अनियंत्रित विकास ने भी तापमान बढ़ाया है, जो मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलावों का अहम कारक है। अमेरिका समेत तमाम विकसित देशों ने विकास के लक्ष्यों हेतु पर्यावरण के प्रश्न को नजरअंदाज किया है। इंसानी लालच व मुनाफाखोरी के औद्योगिक विकास ने अंधाधुंध कार्बन उत्सर्जन करके ग्लोबल वार्मिंग प्रभावों को बढ़ाया है। लेकिन ग्लोबल वार्मिंग प्रभावों से उपजी त्रासदी झेल रहे ग्लोबल साउथ के देशों के प्रति अपनी जिम्मेदारी से विकसित देश विमुख हो जाते हैं। इसका सारा बोझ आखिरकार विकासशील व गरीब मुल्कों पर पड़ जाता है। ऐसे विषम हालात में तुर्किये में चल रहे संयुक्त राष्ट्र के जलवायु शिखर सम्मेलन में उम्मीद की किसी भी किरण पर संदेह के बादल छाए हुए हैं। वैश्विक भू-राजनीतिक हालात संभावना को मुश्किल बना रहे हैं। दुनिया में कई युद्धों और अमेरिका की पर्यावरण संरक्षण नीतियों से विमुखता के चलते सम्मेलन से सार्थक नतीजों की उम्मीद कम ही है। हालांकि, अलनीनो मौसम प्रणाली का असर अभी चरम पर पहुंचना बाकी है, लेकिन नेपाल की भयावह त्रासदी ने आसन्न संकट का चित्र उकेर दिया है। निस्संदेह, ह्यकॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टीज़ह्न यानी सीओपी-31 की अपनी कुछ सीमाएं हैं, जिसमें जलवायु संरक्षण संबंधी बहुपक्षीय सहयोग की कमी और परस्पर विरोधी लक्ष्य शामिल हैं। ऐसे में मानवता को ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभावों से बचाने की दिशा में एक ईमानदार पहल की जरूरत है।

यह हकीकत है कि वर्ष 1850 में वैश्विक तापमान का रिकॉर्ड रखे जाने की शुरूआत के बाद से पिछले 12 साल सबसे गर्म वर्षों में शामिल रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम ने चिंता जतायी है कि ग्यारह साल पहले हुए पेरिस समझौते का यह लक्ष्य कि वैश्विक तापमान में वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तर से 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित रखा जाए, अब हासिल न होगा। तभी ह्यकॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टीज़ह्न जैसे सम्मेलनों की सार्थकता को लेकर आलोचना होती है। विश्व समुदाय का निराश होना स्वाभाविक है क्योंकि पिछले दशकों में इस दिशा में बहुत कम प्रगति हुई है। तमाम सरकारें इस मुद्दे पर उदासीन नजर आती हैं। लेकिन इसके बावजूद बढ़ते तापमान और ग्रीनहाउस गैसों के भारी उत्सर्जन से निपटने के लिये ऐसे आयोजनों के जरिये गंभीर चर्चा करने के अलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं है। ग्लोबल साउथ के देशों के लिये बेहद जरूरी है कि वे अपने अलग-अलग और जटिल हितों के बीच उन उपायों को लागू करें, जिनको लेकर कोई समझौता नहीं किया जा सकता।

हवा हमारी, धुआँ हमारा और साँसें दूसरों की: आखिर कब सुधरेगी हमारी सोच ?

डॉ. मनमोहन प्रकाश



वायु प्रदूषण के लिए सरकारों को आखिर कितना और कब तक कोसा जाएगा? केवल उन्हें ही क्यों दोषी ठहराया जाए? सच तो यह है कि प्रदूषण फैलाने में हम मनुष्यों की आदतों और सोच की जितनी भूमिका है, उतनी शायद किसी और की नहीं। कचरा जलाना हो, पराली जलानी हो या विभिन्न अवसरों पर आतिशबाजी करनी हो, कारखानों की चिमनियों से निकलने वाले धुएँ को शुद्ध किए बिना हवा में छोड़ना हो अथवा प्रदूषण नियंत्रण संबंधी नियमों की अनदेखी करनी हो-हर बार अपने कृत्यों के बचाव में हमारे पास एक-न-एक तर्क तैयार रहता है।



सवाल उठाइए तो जवाब मिलता है-क्या पराली हटाने वाली मशीनों और मजदूरों का खर्च सरकार उठाएगी? क्या हम अपने त्योहार भी हर्षोल्लास से नहीं मनाएँ? क्या हम अपनी खुशियों का इज़हार सार्वजनिक रूप से नहीं कर सकते? क्या हम अपने प्रभु श्रीराम की रावण पर विजय का उत्सव भी नहीं मनाएँ? क्या हम नए वर्ष का स्वागत भी नहीं करें? क्या बारात भी धूमधाम से नहीं निकालें? क्या खेलों में भारत की जीत का जश्न भी नहीं मनाएँ? आदि-आदि।

इतना ही नहीं, नाराजगी भरे लहजे में यह भी कहा जाता है- हमारा कचरा, हमारी पराली, हमारा खेत, हमारे पटाखे, हमारी खुशी और उसे मनाने का हमारा अपना तरीका, फिर किसी को तकलीफ क्यों? ज्यादा ही किसी को तकलीफ है, साँस लेने में परेशानी है, तो वह अपने घर के खिड़की-दरवाजे बंद करके क्यों नहीं रहता? घर में रहने से किसने किसी को मना किया है? फिर भी बाहर निकलना ही है तो मास्क लगाकर और ऑक्सीजन सिलेंडर लेकर घूमे। आखिर वैज्ञानिकों ने पोर्टेबल ऑक्सीजन सिलेंडर किस दिन के लिए बनाए हैं! और फिर मास्क बनाने वाली कंपनियों को भी तो बाजार चाहिए। वाह! प्रदूषण फैलाने वाले अपराधमुक्त और साँस लेने वाले अपनी समस्या के लिए खुद जिम्मेदार!

लेकिन जरा सोचिए, जब आतिशबाजी से आगजनी की घटनाएँ होती हैं और वायु प्रदूषण के कारण लोगों का स्वास्थ्य बिगड़ता है, तब दोष किसे दिया जाए? पटाखे बनाने वाली कंपनी को, उन्हें बेचने वाले को, चलाने वाले को या फिर उन लोगों को, जो दुर्घटनाओं के शिकार होते हैं? अथवा उस व्यवस्था को, जो सुरक्षा नियमों की अनदेखी पर आँखें मूँदे रहती है?

वर्ष 2026 की दीपावली की रात का ही उदाहरण लीजिए। मुंबई में पटाखों से जुड़ी 140 से अधिक आगजनी की घटनाओं की खबरें और राजधानी दिल्ली सहित देश के विभिन्न शहरों में वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) का आसमान छूना इसी चिंता को सामने लाता है। पूरे देश में इस अवसर पर वायु प्रदूष



अब इमोशनली समझदार और मेंटली स्ट्रॉन्ग हूं

अभिनेत्री हर्षिता गौर आगामी फिल्म 'मिर्जापुर' में फिर से डिंपी पंडित के किरदार से वापसी कर रही हैं। अभिनेत्री का मानना है कि मिर्जापुर वेब सीरीज से लेकर अब तक उनके काम में काफी ग्रोथ देखने को मिली है। अभिनेत्री ने आगामी फिल्म 'मिर्जापुर' में फिर से डिंपी पंडित के किरदार के बारे में बताया कि वह अब पहले से बड़ी हो गई है। उन्होंने कहा, 'डिंपी के किरदार में काफी ट्रांसफॉर्मेशन हुआ है, उसने अपनी जिंदगी में बहुत तरक्की की है। मिर्जापुर के हालात कुछ ऐसे हैं कि एक समय के बाद आपको खुद को चुनना होता है और डिंपी ने भी कुछ ऐसा ही किया है। उन्होंने आगे कहा, 'वह इमोशनली समझदार और मेंटली मजबूत है, वह समझती है कि उसे अपनी ताकत दिखाने के लिए इस अफरा-तफरी का हिस्सा बनने की जरूरत नहीं है।'

अभिनेत्री ने आगे शो की पॉपुलैरिटी के बारे में बात की। उन्होंने कहा, 'अगर ये फिल्म सीधे आती तो हमें पता नहीं चलता कि दर्शक उसे कैसा रिस्पॉन्स देंगे, लेकिन लोग पहले से ही शो के इतने बड़े फैन हैं और इसे और ज्यादा देखना चाहते हैं। पहले सीजन वाला वही अंदाज वापस आ गया है, इसलिए मुझे लगता है कि ये सारी चीजें इस एक्सपीरियंस को और भी बेहतर बनाएंगी।'

अभिनेत्री ने बताया कि डिंपी से उन्हें सीखने को मिला, कि चाहे कुछ भी हो जाए, अपने डायनामिक्स में नहीं फंसना चाहिए। आपको अपनी बात रखनी होगी, और आप बिना लड़ाई-झगड़े के ऐसा कर सकते हैं। अभिनेत्री से सवाल किया, 'शो की पॉपुलैरिटी के साथ-साथ, वॉयलेंस और अब्यूसिव लैंग्वेज को लेकर भी क्रिटिसिज्म हुआ है। आपके अनुसार, क्या मिर्जापुर समाज की असलियत को दिखाता है, या यह कभी-कभी वायलेंस को सेंसेशनल बनाता है?'

इस सवाल के जवाब में अभिनेत्री हर्षिता गौर ने कहा, 'असल दुनिया फिक्शन को इंस्पायर करती है और कभी-कभी फिक्शन भी असल दुनिया को दिखाता है। इसलिए, मुझे नहीं लगता कि यह किसी चीज को सेंसेशनल बनाने के बारे में है।'



भंसाली की माइथोलॉजिकल फिल्म में करीना की एंट्री

संजय लीला भंसाली एक पौराणिक जंगल एडवेंचर फिल्म बना रहे हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक इसमें करीना कपूर खान नजर आएंगी। उनके अलावा साउथ एक्टर धनुष भी लीड रोल में होंगे। फिल्म के निर्देशन की कमान पीएस मित्रन संभालेंगे। हाल ही में मित्रन ने फिल्म को लेकर अपडेट शेयर किया है।

क्या साथ नजर आएंगे करीना और धनुष?



निर्देशक पीएस मित्रन ने बताया कि संजय लीला भंसाली के प्रोडक्शन में बनने वाली एक फिल्म के लिए करीना कपूर खान और धनुष के साथ बातचीत चल रही है। पीएस मित्रन इन दिनों 'सरदार 2' के प्रमोशन में व्यस्त हैं। इस दौरान 'सिनेमा विकटन' से बात करते हुए मित्रन ने कहा, 'करीना और धनुष से बातचीत चल रही है, हम कन्फर्मेशन के लिए तारीखें देख रहे हैं। उम्मीद है कि इससे कुछ अच्छा नतीजा निकलेगा'। मित्रन के इस अपडेट के बाद भंसाली के प्रोडक्शन में बनने वाली फिल्म के लिए करीना और धनुष के साथ आने की खबरों ने जोर पकड़ लिया है।

इसी साल शूटिंग शुरू होने की उम्मीद

रिपोर्ट्स के मुताबिक, इस फिल्म को बड़े पैमाने पर बनाए जाने की तैयारी है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, यह प्रोजेक्ट अभी लिखने के स्टेज पर है और फाइनल होने से पहले इसकी स्क्रिप्ट को कई बार फिर से लिखा गया है। उसी रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि नवंबर 2026 में प्री-प्रोडक्शन शुरू होने की उम्मीद है। वहीं, जनवरी 2027 में मुख्य शूटिंग की योजना है। अगर यह प्रोजेक्ट आगे बढ़ता है, तो यह हिंदी सिनेमा में मित्रन के निर्देशन में बनने वाली पहली फिल्म होगी। इसी के साथ इस फिल्म में धनुष और करीना कपूर खान पहली बार एक साथ स्क्रीन शेयर करेंगे। वहीं, 2000 के दशक की शुरुआत में मनमुटाव के बाद संजय लीला भंसाली के साथ करीना इस फिल्म में पहली बार काम करेंगी।

क्या सुलझ गया करीना और भंसाली का पुराना विवाद?

बता दें कि संजय लीला भंसाली ने साल 2002 में फिल्म 'देवदास' बनाई थी। कथित तौर पर इस फिल्म के लिए करीना कपूर को पारो की भूमिका के लिए अप्रोच किया था। अभिनेत्री ने स्क्रीन टेस्ट भी दिया था। हालांकि, बाद में पारो के रोल के लिए भंसाली ने ऐश्वर्या राय बच्चन को चुन लिया। 2002 में फिल्मफेयर को दिए एक इंटरव्यू में करीना ने कहा था, 'उन्होंने मेरे साथ जो किया, वह गलत था। उन्होंने 'देवदास' (2002) के लिए मेरा स्क्रीन टेस्ट लिया। मुझे साइनिंग अमाउंट दिया और फिर किसी और को ले लिया। यह गलत था और मुझे इसलिए ज्यादा बुरा लगा, क्योंकि मैं अपने करियर की शुरुआत में थी'।

भंसाली ने क्या कहा था?

भंसाली ने कहा था कि करीना ने ही इस रोल के लिए उनसे संपर्क किया था और स्क्रीन टेस्ट का मतलब यह पक्का होना नहीं था कि उन्हें फिल्म में कास्ट किया जाएगा। जुलाई 2002 में फिल्मफेयर से बात करते हुए उन्होंने याद किया कि करीना डिजाइनर नीता लुल्ला के साथ उनके घर आई थीं। भंसाली ने कहा कि उन्होंने स्क्रीन टेस्ट तो किया था, लेकिन इसका मतलब यह पक्का नहीं था कि करीना को फिल्म में कास्ट किया जाएगा। बता दें कि अगर भंसाली की फिल्म में करीना नजर आती हैं, तो यह माना जा सकता है कि निर्देशक के साथ उनका पुराना मनमुटाव खत्म हो चुका है। करीना के वर्क फ्रंट की बात करें तो वे मेघना गुलजार निर्देशित फिल्म 'दायरा' में नजर आएंगी।





स्क्रीन पर कैरेक्टर को जस्टिफाई करना एक एक्टर की जिम्मेदारी

टेलीविजन अभिनेत्री समीक्षा भटनागर इन दिनों टीवी सीरियल 'अनुपमा' में श्रुति आहूजा के किरदार में नजर आ रही हैं। अभिनेत्री का मानना है कि वे खुशकिस्मत हैं कि उन्हें श्रुति का दिलचस्प किरदार करने और डीकेपी (डायरेक्टर्स कट प्रोडक्शन) प्रोडक्शंस में काम करने का मौका मिला। अभिनेत्री ने कहा, 'टीवी सीरियल अनुपमा पहले से बहुत लोकप्रिय शो है, जब मुझे डीकेपी (डायरेक्टर्स कट प्रोडक्शन) प्रोडक्शंस की तरफ से मुझे श्रुति आहूजा का किरदार निभाने को मिला, तो मैंने सबसे पहले उसे समझा। मुझे लगा कि इसमें दम है और यह मुझ पर सूट करता है। इसी बात ने मुझे जल्दी से रोल करने के लिए मना लिया और अब लोगों को भी यह किरदार पसंद आ रहा है।' अभिनेत्री ने आगे श्रुति आहूजा के किरदार के बारे में बताया, 'हर रोल एक नया चैलेंज लेकर आता है और श्रुति आहूजा का किरदार भी कुछ ऐसा ही था। वह एक मां है, जिन्हें अपनी बेटी के लिए खुद को जस्टिफाई करना पड़ता है। वह अपनी बेटी से प्यार करती हैं, लेकिन वह एक नेगेटिव कैरेक्टर नहीं है और मैं नहीं चाहती थी कि लोग उन्हें उस तरह से देखें।'

उन्होंने आगे कहा, 'मेरा मानना है कि स्क्रीन पर उस कैरेक्टर को जस्टिफाई करना एक एक्टर की जिम्मेदारी है।' अभिनेत्री ने आगे बताया कि जब भी उन्हें कोई रोल ऑफर होता है, तो वह पहले अपने किरदार के बारे में सोचती हैं कि उसमें क्या नयापन लाया जा सकता है। उन्होंने कहा, 'जब भी मुझे कोई रोल ऑफर होता है, तो मेरे लिए यह समझना बहुत जरूरी होता है कि मैं उस किरदार में क्या ला सकती हूं। एक एक्टर के तौर पर, मैं उसमें क्या योगदान दे सकती हूं? उसके बाद, कैरेक्टर के बारे में मेरी समझ बहुत जरूरी हो जाती है। मेरे लिए स्क्रीन पर रोल के साथ जस्टिस करना और यह पक्का करना भी उतना ही जरूरी है कि लोग उससे कनेक्ट करें।'

मेरे लिए जन्मदिन खुद के बारे में सोचने का एक समय है

'दृश्यम' और 'बेपनाह' जैसी फिल्मों और टीवी शो का हिस्सा रह चुकीं एक्ट्रेस इशिता दत्ता बुधवार को अपना 36वां जन्मदिन सेलिब्रेट कर रही हैं। इस खास दिन पर उन्होंने अपनी जिंदगी और अब तक की जर्नी को लेकर बात की। उन्होंने बताया कि उनके लिए बर्थडे वह समय होता है, जब वह थोड़ा रुककर जिंदगी को देखती हैं और सोचती हैं कि अब तक उन्होंने क्या हासिल किया है। एक्ट्रेस का कहना है कि जिंदगी में आगे बढ़ने और नए सपने देखने जरूरी हैं, लेकिन साथ ही उन चीजों की कद्र करना भी जरूरी है, जो हमारे पास पहले से मौजूद हैं। आईएएनएस के साथ खास बातचीत में इशिता ने अपने इस साल के अनुभव को शेयर किया।

उन्होंने कहा, ''जब मैं पीछे मुड़कर अपने बीते साल को देखती हूं, तो मुझे अपनी जिंदगी के लिए सिर्फ खुशी और आभार महसूस होता है। ऐसे कई मौके आए, जब मुझे महसूस हुआ कि मैं वाकई बहुत लकी हूं कि ऐसी जिंदगी जी रही हूं। जाहिर है, जिंदगी में हमेशा कुछ नया हासिल करने और आगे बढ़ने की इच्छा रहती है। कुछ नए लक्ष्य होते हैं और कुछ ऐसी जगहें होती हैं, जहां हम पहुंचना चाहते हैं। लेकिन, हमारे पास पहले से जो कुछ है, उसे देखना और उसकी कद्र करना भी बहुत जरूरी है। इस जन्मदिन पर मैं बस इन्हीं चीजों के लिए बहुत भाग्यशाली महसूस कर रही हूं।'' इशिता इस समय अपनी अपकमिंग प्रोजेक्ट 'घमासान' के प्रमोशन में बिजी हैं। यह जी5 पर स्ट्रीम होने वाला है। एक्ट्रेस ने कहा, ''इस प्रोजेक्ट का अनुभव मेरे लिए बहुत शानदार रहा है। मेरे जन्मदिन के आसपास इसका प्रमोशन करना काफी स्पेशल लग रहा है। किसी भी प्रोजेक्ट में आप अपनी पूरी मेहनत लगाते हैं और फिर एक ऐसा वक्त आता है, जब आप उसे ऑडियंस के सामने लेकर जाते हैं। अब मैं यह देखने के लिए काफी उत्साहित हूं कि लोगों का इस प्रोजेक्ट को लेकर कैसा रिएक्शन आता है।'' इशिता ने बताया, ''मैं इस नए साल को लेकर खुद पर ज्यादा प्रेशर नहीं डालना चाहती। मैं बस इसे जीना चाहती हूं, इसका मजा लेना चाहती हूं और इसमें पूरी तरह मौजूद रहना चाहती हूं। मैं ऐसा काम करती रहना चाहती हूं, जिससे मुझे खुशी मिले। मैं उन लोगों के साथ वक्त बिताना चाहती हूं, जो मेरे लिए मायने रखते हैं और लगातार कुछ नया सीखना चाहती हूं। अगर मैं ऐसा कर पाई, तो मुझे लगता है कि मेरा साल काफी खूबसूरत रहेगा।'' वर्कफ्रंट की बात करें तो इशिता आने वाले समय में 'दृश्यम 3' में दिखाई देंगी। 'दृश्यम' फ्रेंचाइजी को दर्शकों का खूब प्यार मिला है और अब इसका तीसरा पार्ट इस कहानी का आखिरी चैप्टर होने वाला है।





सिंह वर्सेस कौर 2 में कॉमेडी, लव स्टोरी, एक्शन और ड्रामा का तड़का

एक्टर गिप्पी ग्रेवाल और शहनाज गिल इन दिनों अपनी अपकमिंग पंजाबी फिल्म 'सिंह वर्सेस कौर 2' के प्रमोशन में बिजी हैं। दिल्ली में हुए एक मीडिया मीट के दौरान दोनों ने फिल्म से जुड़े अपने एक्सपीरियंस शेयर किए और बताया कि वह फिल्म को लेकर काफी एक्साइटेड हैं। खास बात यह है कि इस फिल्म के जरिए पहली बार गिप्पी ग्रेवाल और शहनाज गिल की जोड़ी पर्दे पर साथ नजर आएगी। फिल्म 11 सितंबर को दुनियाभर के सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। इसमें कॉमेडी, रोमांस, इमोशन, एक्शन और ड्रामा का पूरा डोज देखने को मिलेगा।

आईएएनएस से बातचीत में गिप्पी ग्रेवाल ने फिल्म को लेकर अपनी एक्साइटमेंट जाहिर की। उन्होंने कहा, ''फिल्म 'सिंह वर्सेस कौर 2' को लेकर मैं काफी एक्साइटेड हूं और मुझे उम्मीद है कि दर्शक इसे पसंद करेंगे। मैं और शहनाज गिल पहली बार किसी फिल्म में साथ काम कर रहे हैं। फिल्म के पहले पार्ट को दर्शकों का काफी प्यार मिला था और इसी वजह से दूसरे पार्ट से भी हमारी काफी उम्मीदें बढ़ गई हैं। फिल्म में कॉमेडी, लव स्टोरी, इमोशन्स, एक्शन और ड्रामा सब कुछ देखने को मिलेगा। पंजाबी सिनेमा में इस तरह की फिल्में कम देखने को मिलती हैं, इसलिए यह फिल्म दर्शकों के लिए एक अलग एक्सपीरियंस साबित होगी।''

गिप्पी ने फिल्म के म्यूजिक को लेकर भी बात की। उन्होंने बताया कि फिल्म में कुल सात गाने हैं, जिनमें रोमांटिक से लेकर देसी और भांगड़ा नंबर तक शामिल हैं। फिल्म के दो गाने रिलीज हो चुके हैं, जबकि आने वाले दिनों में एक और गाना रिलीज किया जाएगा, जिसमें बी प्राक शामिल हैं। गिप्पी ग्रेवाल ने अपने किरदार के बारे में भी विस्तार से बताया। उन्होंने कहा, ''मैं फिल्म में निहाल सिंह का किरदार निभा रहा हूं, जो एक पिंड का देसी लड़का है। उसका किसी काम में मन नहीं लगता। वह अक्सर काम से बचने के लिए बहाने बनाता है और कई बार झूठ भी बोलता है। वह उल्टे-सीधे काम करता रहता है, लेकिन कहानी आगे बढ़ने के साथ उसकी जिंदगी में एक बड़ा बदलाव आता है। निहाल सिंह एक बड़ी जिम्मेदारी उठाने का फैसला करता है और इसी जिम्मेदारी को निभाने के दौरान उसकी जिंदगी में कई तरह की मुश्किलें आती हैं। अब वह इस जिम्मेदारी को कैसे निभाता है और इसके चक्कर में उसे किन हालातों से गुजरना पड़ता है, यही फिल्म की कहानी का अहम हिस्सा है।''

शहनाज गिल ने भी फिल्म को लेकर अपनी एक्साइटमेंट जाहिर की। उन्होंने कहा, ''जो लोग मुझे जानते हैं, उन्हें पता है कि मैं सिर्फ अच्छे प्रोजेक्ट्स का हिस्सा बनना पसंद करती हूं और 'सिंह वर्सेस कौर 2' भी मेरे लिए ऐसा ही एक शानदार प्रोजेक्ट है। फिल्म में मैं एक बंगाली लड़की का किरदार निभा रही हूं। मेरा किरदार बंगाली लड़की का क्यों है और कहानी में उसकी क्या भूमिका है, यह दर्शकों को फिल्म देखने के बाद ही पता चलेगा। इस किरदार को निभाना मेरे लिए आसान नहीं था, क्योंकि मैं खुद पंजाबी हूं और बंगाली भाषा बोलने में मुझे शुरुआत में काफी परेशानी हुई। हालांकि, मुझे इसके लिए ट्रेनिंग दी गई और इसी ट्रेनिंग की मदद से मैं किरदार को सही तरीके से निभा पाई।'' शहनाज ने शूटिंग के दौरान की मस्ती का भी जिक्र किया। उन्होंने बताया कि पूरी टीम ने शूटिंग के दौरान खूब मजे किए और सेट पर माहौल काफी अच्छा रहा। जब फिल्म की शूटिंग खत्म हुई तो पूरी टीम थोड़ी उदास हो गई थी। सभी को एक-दूसरे की कमी महसूस हुई थी। अब फिल्म की बात करें तो 'सिंह वर्सेस कौर 2' को नवनीत सिंह ने डायरेक्ट किया है। फिल्म में गिप्पी ग्रेवाल और शहनाज गिल के साथ प्रिंस कंवलजीत सिंह, रघवीर बोली, हनी मट्टू, गुलजार चहल, रुपिंदर रूपी, गुरप्रीत भंगू, गुरमीत साजन और भाना ला जैसे कलाकार भी नजर आएंगे। फिल्म को गिप्पी ग्रेवाल, रवनीत कौर ग्रेवाल, श्रीकांत मोहता और महेंद्र सोनी ने प्रोड्यूस किया है। फिल्म की कहानी गुरप्रीत सेहजी ने लिखी है, जबकि स्क्रीनप्ले कपिल चोपड़ा और गुरप्रीत सहजी ने तैयार किया है। डायलॉग्स चंचल डाबरा और गुरप्रीत सहजी ने लिखे हैं।



वैज्ञानिकों ने खोजा अरबों का खजाना!

प्लैटिनम, सोना जैसी बहुमूल्य धातुएं का बना है यह एस्टेरॉइड

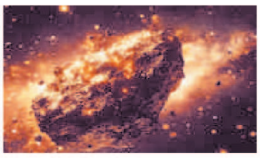
ब्रह्मांड में कई अनसुलझे रहस्य हैं, जिन्हें सुलझाने में विज्ञान लगा हुआ है। लेकिन हमारा विज्ञान ऐसे रहस्यों तक भी पहुंच गया है, जिन्हें सुनकर आपके होश उड़ सकते हैं। वैज्ञानिकों ने एक ऐसा क्षुद्रग्रह खोजा है, जिसमें सोना, प्लैटिनम, निकल और लोहे जैसी बहुमूल्य धातुएं मिली हैं। इस एस्टेरॉइड का नाम 16 साईकी है, जिसे इटली के खगोलविद एनीबॉनी गैस्परिस ने खोजा था। 16 साईकी सौरमंडल में खोजा गया 16वां एस्टेरॉइड था, जिसकी वजह से इसका नाम 16 साईकी रखा गया। वैज्ञानिकों की मानें तो 16 साईकी पर मौजूद धातुओं की कीमत पूरी पृथ्वी की अर्थव्यवस्था से भी कई गुना अधिक हो सकती है। वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि 16 साईकी पर मौजूद धातुएं बहुमूल्य हैं, जिनकी कीमत करीब 100 क्वाड्रिलियन डॉलर हो सकती है। यानी अगर इसे धरती पर लाया जा सके, तो धरती का हर व्यक्ति अमीर हो सकता है।

आखिर यह एस्टेरॉइड धातु से कैसे बना

यही वजह है कि इस मिशन को लेकर NASA कड़ी मेहनत कर रहा है। लेकिन यह समझना भी जरूरी है कि आखिर यह एस्टेरॉइड धातु से कैसे बना? आमतौर पर जो एस्टेरॉइड होते हैं, वे कार्बन, बर्फ और पत्थर से बने होते हैं। लेकिन इस एस्टेरॉइड पर धातु कैसे पहुंच गई? वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि 16 साईकी किसी पुराने ग्रह का कोर हो सकता है, जिसके चलते यह धातुओं का बना हो सकता है। 16 साईकी की बाहरी परत किसी बड़ी टक्कर के चलते अलग हो गई होगी, जिसके चलते यह ऐसा दिखता है। बता दें कि ग्रह बनने की शुरुआती अवस्था में जो धातुएं होती हैं, वे ग्रह के कोर में स्थित हो जाती हैं। शायद 16 साईकी भी किसी ग्रह का कोर रहा होगा।

क्या धरती पर लाया जा सकता है यह सोना?

अब सवाल यह है कि क्या इस बहुमूल्य, कीमती सोने को धरती पर लाया जा सकता है? दरअसल, यह लगभग नामुमकिन सा है, जिसके पीछे कई कारण हैं। सबसे बड़ा कारण है ब्रह्मांड की दूरी। जितना दूर यह एस्टेरॉइड है, उसे लाने के लिए अब तक ऐसी टेक्नोलॉजी विकसित नहीं हुई है। और अगर किसी तरह से इस सोने को धरती पर लाया भी जाए, तो सोने की कोई कीमत नहीं रह जाएगी और उसका महत्व खत्म हो जाएगा। वैज्ञानिकों द्वारा यह खोज की जा रही है कि आखिर यह ग्रह कैसे बना।





भारत के इस 4000 साल पुराने मंदिर की मूर्ति दबाने पर निकलता है रक्त!

150 सीढ़िया चढ़ जीवित भगवान के भक्त करते है दर्शन

4000 साल पुराना ये मंदिर 1500 फीट ऊंचे पहाड़ पर बसा है, जहां भगवान नरसिम्हा की स्वयंभू मूर्ति विराजमान है। भक्तों का मानना है कि मूर्ति जीवित है और इसे हल्का दबाने पर खून जैसा लाल द्रव निकलता है। मॉनसून में हजारों लोग 150 सीढ़ियां चढ़कर इस चमत्कार के दर्शन करने पहुंच रहे हैं। ये स्थान चारों तरफ हरियाली से घिरा है, और पहाड़ की शांति इसे आध्यात्मिक साधकों के लिए खास बनाती है। पुजारी मूर्ति पर चंदन का लेप लगाते हैं ताकि 'खून' को रोका जा सके। भक्तों का कहना है कि ये मूर्ति अपने आप प्रकट हुई थी, जिससे इसकी आस्था और गहरी हो जाती है। मंदिर का प्राकृतिक माहौल और रहस्यमयी कहानी इसे धार्मिक यात्रियों के लिए आकर्षण का केंद्र बनाती है।

स्वयंभू मूर्ति का अनोखा रहस्य

लक्ष्मी नरसिंह स्वामी मंदिर की मूर्ति की सबसे बड़ी खासियत है इसकी मुलायम बनावट। भक्तों का दावा है कि मूर्ति को हल्का दबाने पर उसमें गड्ढा बन जाता है, और ज्यादा दबाव पर लाल द्रव निकलता है, जिसे वे खून मानते हैं। पुजारी बताते हैं कि ये स्वयंभू मूर्ति है, जिसे किसी शिल्पी ने नहीं बनाया। इसे धरती से



अपने आप प्रकट हुआ माना जाता है। इस चमत्कार को देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। वैज्ञानिक इसका कारण मूर्ति की सामग्री या प्राकृतिक रासायनिक प्रक्रिया मानते हैं, लेकिन भक्तों की आस्था अटल है।

मंदिर का इतिहास और महत्व

कहा जाता है कि ये स्थान 4000 साल पुराना है और भगवान नरसिम्हा की शक्ति का प्रतीक है। हिंदू मान्यताओं में नरसिम्हा को विष्णु का क्रोधी अवतार माना जाता है, जो बुराई का नाश करते हैं। यहाँ आने वाले भक्तों का विश्वास है कि यहां दर्शन करने से दुखों से मुक्ति मिलती है और मनोकामनाएं पूरी होती हैं। खासकर नि:संतान दंपतियों के लिए ये मंदिर आशा का केंद्र है। मॉनसून में सीढ़ियां चढ़ना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, लेकिन भक्त इसे भक्ति का हिस्सा मानते हैं।

दर्शन का समय और सावधानियां

ये जगह सुबह 5 बजे से रात 8 बजे तक खुली रहती है। मॉनसून में बारिश के कारण सीढ़ियां फिसलन भरी हो सकती हैं, इसलिए मजबूत जूते पहनें। मूर्ति को छूने से पहले पुजारी की इजाजत जरूरी है, क्योंकि इसे पवित्र माना जाता है। फोटोग्राफी की अनुमति नहीं है, ताकि पवित्रता बनी रहे। वारंगल से इस जगह तक बस या टैक्सी से आसानी से पहुंचा जा सकता है। आसपास बुनियादी सुविधाएं जैसे खाने-पीने की दुकानें और विश्राम स्थल उपलब्ध हैं।



इस मछली को मिला वास्तुकला का ऐसा वरदान, पंख फड़फड़ाते ही बना दे अभेदी किला

फिश शब्द जुड़ते ही अमूमन लोग चीजों को मामूली समझने की भूल कर बैठते हैं, लेकिन जिस मछली की बात हम कर रहे हैं, न तो वो कोई मामूली मछली है और न ही यह ढूंढने से आसानी से मिलती है। इसलिए इसके बारे में जानकारी रखना आपके लिए बेहद जरूरी है।

वास्तुकला में इंसानों को भी देती मात

इस पर आपको भले ही यकीन न हो, मगर ये शत प्रतिशत सच है। दरअसल, पफर फ़िश के पास भगवान का दिया एक नायाब हुनर है। जी हां पफर फिश के पास वास्तु कला का बेहतरीन ज्ञान है। इसकी मदद से यह मछली पानी के नीचे एक क़िला बनाकर रहती है। यदि आप इस मछली द्वारा तैयार किए गए इस अभेदी क़िले को देख लें तो आपको जरूर हैरानी होगा होगी। पफर फ़िश भले ही दिखने में एक छोटा सा जीव हो लेकिन इसके द्वार किया गया हर काम अपने आप में अनोखा होता है। पफर फिश द्वारा बनाया ये डिजाइन समुद्र तल पर इतना सुंदर नजर आता है कि देखने वाला बस आखें जमाकर देखता ही रह जाए। कहते हैं कि पफर फ़िश ढूंढने पर भी आसानी से इसलिए नहीं मिलती क्योंकि यह समुद्र तल में बेहद गहराई में रहती है। यहां तक पहुंच पाना किसी गोताखोर के बस की ही बात है। पफर फ़िश बिन हाथ पैरों के केवल अपने पंखों के सहारे ऐसा अभेदी किला तैयार कर देती है। यदि आप इसके डिजाइन को देख लें तो खुद कहेंगे कि यह तो किसी आर्किटेक्ट के द्वारा तैयार किए डिजाइन से कम नहीं है।



अगर दुनिया के सारे ग्लेशियर पिघल जाएं तो क्या होगा?

आपके रोंगटे खड़े देगी वैज्ञानिकों की यह भविष्यवाणी

हमारी पृथ्वी पर बड़ी मात्रा में बर्फ मौजूद है। ग्लेशियर धीरे-धीरे पिघल रहे हैं, जो धरती पर पानी की मात्रा को संतुलित करते हैं। यही पिघलकर नदियों में तब्दील होते हैं और पानी बनता है, जिससे मौसम भी संतुलित रहता है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि अगर धरती पर मौजूद सभी ग्लेशियर पिघल जाएं तो क्या होगा? क्या यह धरती के विनाश का कारण बन सकता है?

वैज्ञानिकों का मानना है कि इससे बेहद बुरा असर होगा। धरती पर तापमान पूरी तरह से बिगड़ जाएगा और कई शहर पानी में डूब जाएंगे। दरअसल, अगर धरती पर मौजूद सभी ग्लेशियर पिघल जाएं तो समुद्र का जलस्तर लगभग 60 से 70 मीटर तक बढ़ जाएगा। यानी समुद्र का पानी तटीय इलाकों में फैल जाएगा और इससे बड़े-बड़े शहर जैसे मुंबई, चेन्नई, कोलकाता ही नहीं, बल्कि दुनिया के न्यूयॉर्क और लंदन जैसे शहर भी पूरी तरह पानी में डूब जाएंगे। इन शहरों में रहने वाले सभी लोग बेघर हो जाएंगे और तबाही मच जाएगी।

बहुत बड़ा नुकसान होगा और पूरी दुनिया में तबाही आ जाएगी इसके अलावा, अगर धरती के सभी ग्लेशियर पिघल जाते हैं तो तटीय इलाके पूरी तरह प्रभावित हो जाएंगे। इनमें रहने वाली एक तिहाई आबादी बेघर हो जाएगी और डूब जाएगी। बड़े-बड़े शहर पानी में समा जाएंगे, जिससे बहुत बड़ा नुकसान होगा और पूरी दुनिया में तबाही आ जाएगी। ज्यादातर शहरों के पानी में डूब जाने से लोग बेघर हो जाएंगे और दूसरे शहरों में शरणार्थी बन जाएंगे। लाखों लोग भुखमरी का शिकार हो जाएंगे और दूसरे इलाकों में जाने को मजबूर होंगे। इससे समाज में अस्थिरता आ जाएगी और संसाधनों की कमी होने लगेगी। हर तरफ झगड़े और संघर्ष होंगे, जिससे पूरी दुनिया की स्थिति बिगड़ जाएगी।

पीने का पानी खत्म हो जाएगा

अगर पूरी दुनिया के ग्लेशियर पिघल जाएंगे तो गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र जैसी नदियां भी सूख जाएंगी क्योंकि ये नदियां ग्लेशियरों से ही पानी प्राप्त करती हैं। नदियों के सूखने से बिजली उत्पादन पर बुरा असर पड़ेगा, पीने का पानी खत्म हो जाएगा और करोड़ों लोग पानी की कमी से जूझेंगे। लोग खेती करना बंद कर देंगे क्योंकि पानी की कमी हो जाएगी। बिना पानी के फसलें नहीं उगेंगी, जिससे कुपोषण और भुखमरी बढ़ेगी। खाने की चीजों की भारी कमी हो जाएगी, जिससे गरीब देशों की हालत और ज्यादा खराब हो जाएगी। ग्लेशियर धरती के तापमान को संतुलित करने में अहम भूमिका निभाते हैं। अगर ये खत्म हो जाएंगे तो मौसम का पूरा पैटर्न बिगड़ जाएगा, जिससे पूरी दुनिया पर विनाशकारी प्रभाव पड़ेगा।



अनोखा आइलैंड जहां रहती हैं सिर्फ महिलाएं!

घर चलाने से लेकर लोगों के अंतिम संस्कार तक करती हैं सारे काम



पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को सिर्फ घर संभालने के लिए ही उपयुक्त माना जाता है. कई रूढ़ीवादी लोगों का तो ये भी मानना होता है कि महिलाएं नौकरी नहीं कर सकतीं, रोजमर्रा के अन्य काम नहीं कर सकतीं, सिर्फ घर चला सकती हैं. ऐसे लोगों के मुंह पर ताले लगाता है एस्टोनिया देश का अनोखा गांव जहां 90 फीसदी से ज्यादा आबादी महिलाओं की है. इस आइलैंड की खासियत ये है कि आइलैंड में अधिकतर महिलाएं रहती हैं जो पूरे द्वीप की जिम्मेदारी संभाले हुए हैं. एस्टोनिया का किहनु आइलैंड, महिलाओं के आइलैंड के नाम से फेमस है. आइलैंड का नाम यूनेस्को के इंटैंजिबिल कल्चरल हेरिटेज ऑफ यूमैनिटी की लिस्ट में शामिल है. इस आइलैंड पर करीब 300 लोग रहते हैं, जिनमें से अधिकतर महिलाएं हैं. आप सोच रहे होंगे कि सिर्फ महिलाएं ही क्यों रहती हैं. पुरुष कहां हैं और क्या ये महिलाएं अविवाहित हैं अगर नहीं तो इनका परिवार कहां है?

महिलाएं करती हैं धार्मिक अनुष्ठान

इन महिलाओं के पति और परिवार के पुरुष एस्टोनिया में नौकरी करने के मकसद से रहते हैं. इसलिए आइलैंड पर अधिकतर महिलाएं ही रह जाती हैं. मगर इन महिलाओं ने इस पूरे द्वीप को इस तरह चलाया है कि सब इनकी तारीफ करते हैं. ये अपनी मान्यताओं और रिवाजों को बनाए रखती हैं. त्योहारों को धूम-धाम से मनाती हैं, नाचती हैं, गाती हैं और मर्दों के पैसों के अलावा शिल्पकारी कर के पैसे कमाती हैं. महिलाएं ही इस द्वीप पर शादियां करवाती हैं वहीं लोगों के अंतिम संस्कार करने का जिम्मा भी इनका ही होता है. मातृसत्ता से बने इस आइलैंड के रिवाजों की खासियत के कारण है यहां के लोग अपनी मान्यताओं से बिखरे नहीं हैं. रिपोर्ट्स की मानें तो आइलैंड पर क्रिमिनल और देश निकाला की सजा भुगत रहे लोग ही रहा करते थे. लगभग 50 सालों तक आइलैंड को सोवियत संघ ने अपने कब्जे में रखा. उस वक्त से ही यहां महिलाओं का वर्चस्व था. हालांकि अब बदलते समय के साथ युवा लड़के-लड़कियां आइलैंड से बाहर जाकर पढ़ाई या नौकरी करना चाहते हैं जिसके कारण अब धीरे-धीरे यहां की खास परंपरा खत्म होती जा रही है.



वोट बचाओ-देश बचाओ अभियान : जन चौपाल में कांग्रेस ने उठाई मताधिकार की रक्षा की आवाज

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

वोट बचाओ-देश बचाओ अभियान के तहत प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निर्देश पर शहर जिला कांग्रेस कमेटी एवं दक्षिण ब्लाक कांग्रेस कमेटी के मार्गदर्शन में कैलाश नगर मंडल कांग्रेस कमेटी के नेतृत्व में बुधवार को रामनगर में जन चौपाल का आयोजन किया गया। इसमें कांग्रेस पदाधिकारियों, जनप्रतिनिधियों और कार्यकताओं ने मताधिकार की रक्षा तथा लोकतांत्रिक व्यवस्था की मजबूती के लिए एकजुट होकर आवाज बुलंद की।

जन चौपाल को संबोधित करते हुए शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष जितेंद्र मुदलियार ने कहा कि लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत जनता का वोट है। इसी वोट के आधार पर सरकारें बनती हैं और सत्ता का भविष्य तय होता है। यदि मतदाता के इसी अधिकार के साथ छेड़छाड़ होती है तो यह केवल किसी राजनीतिक दल का नुकसान नहीं, बल्कि लोकतंत्र की बुनियाद पर हमला है। कांग्रेस इस अधिकार की रक्षा के लिए सड़क से सदन तक संघर्ष करेगी।

उन्होंने कार्यकताओं से कहा कि वे केवल राजनीतिक बयानबाजी तक सीमित न रहें, बल्कि घर-घर पहुंचकर लोगों को उनके मताधिकार के प्रति जागरूक करें। मतदाता सूची की जांच कराएं और किसी भी तरह की गड़बड़ी सामने आने पर संगठित होकर आवाज उठाएं। मुदलियार ने कहा कि वोट बचाना केवल कांग्रेस का राजनीतिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि संविधान और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा का अभियान है। जब मतदाता का अधिकार सुरक्षित रहेगा, तभी लोकतंत्र मजबूत रहेगा। कांग्रेस का प्रत्येक कार्यकर्ता इस अभियान को जन आंदोलन बनाने के संकल्प के साथ मैदान में उतरे। उन?होंने बताया ? कि आने वाले दिनों में अन?य मंडलों में भी चौपाल के आयोजन किए जाएंगे।



जन चौपाल में लक्ष्मण साहू ने अभियान के उद्देश्यों और संगठन की भूमिका पर विचार रखे। राजेश चौहान ने कैलाश नगर मंडल में अभियान को जन-जन तक पहुंचाने के लिए कार्यकताओं से सक्रिय भागीदारी की अपील की। उपस्थित पदाधिकारियों ने मतदाताओं को जागरूक करने और लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा के लिए निरंतर जनसंपर्क करने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम में पूर्व अध्यक्ष रमेश राठौर, कुलबीर सिंह छाबड़ा, राकेश जोशी, अम्मी हुड्डा, अशोक पंजवानी, सूर्यकांत जैन, मामराज अग्रवाल, झमन देवांगन, लक्ष्मण साहू, चेतन भानुशाली, चंद्र शेखर वैष्णव, राजेश चौहान, अंकेश वाघना, शकील रिजवी, भारत सोनी, डॉ राकेश कुमार, बंटी यादव, विशु अजमानी, जय जयसवाल, गोलू नायक, निहाल खान, शाहीन कुरैशी सहित बड़ी संख?या में कांग्रेसीजन उपस्थित थे।

खास खबर

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की पाती पाकर भावुक हुई लखपति दीदी रुखमणी साहू

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव



मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की ओर से प्राप्त आत्मीय पत्र ने राजनांदगांव विकासखंड के ग्राम सुकुलदैहान की रहने वाली लखपति दीदी श्रीमती रुखमणी साहू के जीवन में खुशी, सम्मान और नई ऊर्जा का संचार कर दिया है। मुख्यमंत्री की पाती पाकर वे बेहद भावुक हो उठीं। उनके लिए यह केवल एक पत्र नहीं, बल्कि उनके संघर्ष, परिश्रम, परिवार के सहयोग और आगे बढ़ने के संकल्प को मिला एक अनमोल सम्मान है। मुख्यमंत्री के स्नेहपूर्ण शब्दों ने उनके आत्मविश्वास को नई मजबूती दी है जिसे देखें अपनी खुशी जाहिर करते हुए श्रीमती रुखमणी साहू ने कहा कि आज उन्हें अपने भैया—मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का पत्र प्राप्त हुआ है, जिसे पाकर वे अत्यंत आनंदित और उत्साहित हैं। उन्होंने कहा कि शासन की योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के साथ-साथ उनके प्रयासों को इस तरह प्रोत्साहन मिलना बेहद सुखद और गर्व का क्षण है।

पति की देशसेवा और बेटियों के भविष्य पर मुख्यमंत्री के स्नेह ने छुआ दिल : श्रीमती साहू ने विशेष रूप से अपने पति के योगदान का जिक्र करते हुए बताया कि उनके पति एक भूतपूर्व सैनिक हैं, जिन्होंने देश की सेवा करने के बाद जन्मभूमि लौटकर परिवार की जिम्मेदारियों के साथ उनके हर कार्य में पूरा सहयोग दिया है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय द्वारा उनके पति की देशसेवा के प्रति आभार व्यक्त करना पूरे परिवार के लिए बेहद गौरव की बात है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री द्वारा उनकी दोनों बेटियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करना और माता-पिता के प्रति सम्मान व्यक्त करना उनके हृदय को छू गया है। यह आत्मीयता उनके परिवार के लिए हमेशा-हमेशा के लिए अविस्मरणीय रहेगी।

बिहान योजना ने दी नई पहचान, विकसित छत्तीसगढ़ का संकल्प : श्रीमती साहू ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में आज प्रदेश की महिलाओं को आगे बढ़ने के अनगिनत अवसर मिल रहे हैं। बिहान परियोजना महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के साथ-साथ उनमें आत्मविश्वास और समाज में एक नई पहचान स्थापित करने की प्रेरणा दे रही है। शासन के इन प्रयासों से उनके जैसी तमाम महिलाएं अपने सपनों को साकार कर दूसरों के लिए भी प्रेरणास्रोत बन रही हैं। भावुक होते हुए उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री द्वारा दिया गया यह स्नेह और प्रोत्साहन उनके लिए अनमोल है। उन्होंने प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री और बिहान परियोजना के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री की यह पाती उन्हें जीवन में सदैव आगे बढ़ने की प्रेरणा देती रहेगी। साथ ही, उन्होंने विकसित भारत एवं विकसित छत्तीसगढ़ 2047 के सपने को साकार करने में अपनी पूरी सक्रिय भागीदारी निभाने का दृढ़ संकल्प लिया है।

मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना से पूरी हो रही तीर्थयात्रा की अभिलाषा, जिले के 21 तीर्थयात्री रवाना

जिला पंचायत उपाध्यक्ष विक्रांत सिंह ने दिखाई हरी झंडी, सुखद एवं मंगलमय यात्रा की दी शुभकामनाएं

खैरागढ़। मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के अंतर्गत खैरागढ़-छुईखदान-गंडई जिले के 21 तीर्थयात्रियों का जत्था मंगलवार को कलेक्ट्रेट परिसर से रवाना हुआ। जिला पंचायत उपाध्यक्ष विक्रांत सिंह ने हरी झंडी दिखाकर दल को रवाना किया और यात्रियों की सुखद एवं मंगलमय यात्रा की कामना की। छत्तीसगढ़ शासन के निर्देशानुसार चयनित ये तीर्थयात्री स्वर्ण मंदिर एवं माता वैष्णो देवी मंदिर के दर्शन करेंगे। यात्रा के दौरान दल वाघा बॉर्डर का भी भ्रमण करेगा। रवानगी से पूर्व कलेक्ट्रेट परिसर में अतिथियों ने तीर्थयात्रियों का पुष्पमाला पहनाकर आत्मीय स्वागत किया और शुभकामनाएं दीं। समाज कल्याण विभाग द्वारा यात्रियों के लिए स्वल्पाहार की व्यवस्था की गई थी। मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना वरिष्ठ एवं पात्र नागरिकों की आस्था का सम्मान करते हुए उन्हें धार्मिक स्थलों के दर्शन का अवसर उपलब्ध करा रही है। योजना से उनकी तीर्थयात्रा की अभिलाषा साकार हो रही है।

इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती गिरजा चंद्राकर, जनपद अध्यक्ष प्रतिनिधि शैलेन्द्र त्रिपाठी, जनपद उपाध्यक्ष लखन साहू, जनपद सदस्य शैलेन्द्र मिश्रा, विशेसर साहू, विकेश गुप्ता, नंदकुमार चंद्राकर एवं सहायक संचालक समाज कल्याण कमलेश कुमार पटेल सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

छठ पर्व और मोहारा मेला की तैयारियां तेज महापौर और निगम आयुक्त ने किया निरीक्षण

तालाब के किनारे पूजन सामग्री विसर्जित करने के लिए जालियाँ लगाई जाएं, ताकि फूल-पत्ते पानी में न फैलें



नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

आगामी छठ पर्व और ऐतिहासिक मोहारा मेला की तैयारियों को लेकर नगर निगम पूरी तरह सक्रिय हो गया है। इसी कड़ी में बुधवार को महापौर श्री मधुसूदन यादव और निगम आयुक्त श्री जी.आर. मरकाम ने शहर के प्रमुख तालाबों और मोहारा मेला स्थल का संयुक्त निरीक्षण किया। अधिकारियों ने छठ पर्व के पूर्व शहर और तालाबों के आसपास साफ-सफाई, चूना-दवा छिड़काव तथा विद्युत व्यवस्था को पूरी तरह दुरुस्त करने के कड़े निर्देश दिए हैं। इस महत्वपूर्ण निरीक्षण के दौरान शिक्षा विभाग के प्रभारी सदस्य आलोक श्रीती और पार्षद चन्द्रकृत साहू विशेष रूप से उपस्थित रहे।

मोती और चिखली तालाब में रहेगी विशेष व्यवस्था, पूजा सामग्री के लिए लगेंगी जालियाँ

राजनांदगांव में हर साल की तरह इस बार भी मोती तालाब और चिखली तालाब में तीन दिनों तक श्रद्धा के साथ छठ पर्व मनाया जाएगा। पर्व के मद्देनजर महापौर श्री यादव और आयुक्त श्री मरकाम ने मोती तालाब का जायजा लिया। महापौर ने स्वास्थ्य एवं तकनीकी अधिकारियों को निर्देश दिए कि तालाब के किनारे संपूर्ण घाट की विशेष सफाई की जाए, कटीली झाड़ियों को काटा जाए, डस्टबिन रखे जाएं तथा दवा का छिड़काव कर चूने की लाइन डाली जाए। उन्होंने तालाबा के रास्तों को दुरुस्त करने और पर्याप्त विद्युत व्यवस्था सुनिश्चित करने को कहा। साथ ही, यह भी निर्देश दिए कि तालाब के किनारे पूजन सामग्री विसर्जित करने के लिए जालियाँ लगाई जाएं, ताकि फूल-पत्ते पानी में न फैलें।

आयुक्त श्री मरकाम ने स्पष्ट किया कि सभी कर्मचारी त्योहार तक नियमित रूप से मोती और चिखली तालाब के किनारों की सफाई करेंगे और लगाई गई लाइटें प्रतिदिन जलें, इसका विशेष ध्यान रखा जाएगा। इसके अलावा पूरे शहर में भी स्वच्छता व्यवस्था चाक-चौबंद रखने के निर्देश दिए गए हैं।

मोहारा मेला स्थल पर पुन्नी स्नान के लिए महिलाओं हेतु बनेंगे अस्थायी चेंजिंग रूम

निरीक्षण के अगले चरण में अधिकारियों ने मोहारा मेला स्थल का जायजा लिया। यहाँ पुन्नी स्नान के दौरान आने वाली श्रद्धालुओं की भीड़ को ध्यान में रखते हुए व्यापक प्रबंध करने के निर्देश दिए गए। महापौर श्री यादव ने नदी किनारे पचरी का गाद निकालकर सफाई करने, संपूर्ण मेला स्थल की साफ-सफाई और कटीली झाड़ियाँ काटकर मैदान को समतल करने के निर्देश दिए। उन्होंने मोहारा और हल्दी घाट की सफाई कर पुन्नी स्नान करने वाली महिलाओं के लिए अस्थायी चेंजिंग रूम बनाने के लिए कहा। साथ ही, शौचालयों की मरम्मत, साफ-सफाई, सुचारू पेयजल और विद्युत व्यवस्था सुनिश्चित करने पर जोर दिया।

आयुक्त श्री मरकाम ने कहा कि मेला स्थल पर पानी, बिजली और सफाई की समुचित व्यवस्था के साथ-साथ नदी की ओर आवश्यक सुरक्षात्मक इंतजाम किए जाएं। इसके अलावा, दुकान लगाने वालों के लिए पसरा ले-आउट प्लान तैयार करने को कहा गया है ताकि सभी दुकानें व्यवस्थित लग सकें और आपातकालीन वाहनों के आवागमन में कोई बाधा न आए।

निरीक्षण के दौरान कार्यपालन अभियंता (संविदा) यू.के. रामटेके, प्रभारी स्वास्थ्य अधिकारी राजेश मिश्रा, प्रभारी उप अभियंता चिराग मेश्राम, स्वच्छता निरीक्षक दीपक श्रीवास्तव, सह उद्यान प्रभारी दिलीप गिरी सहित बड़ी संख्या में निगम अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे।

कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला गुणवत्ता आश्वासन समिति की बैठक आयोजित



परिवार नियोजन क्षतिपूर्ति योजना के प्रकरण की समीक्षा, निर्धारित प्रोटोकॉल के पालन पर दिया गया जोर

स्वास्थ्य संस्थाओं में सुरक्षित, सुलभ एवं गुणवत्तापूर्ण सेवाएं सुनिश्चित करने के निर्देश

नई दृष्टिबिंदु / खैरागढ़

कलेक्टर इंद्रजीत सिंह चंद्रवाल की अध्यक्षता में जिला गुणवत्ता आश्वासन समिति की बैठक आयोजित की गई। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अनिल कुमार शुक्ल के निर्देशन तथा सिविल सर्जन डॉ. आशीष शर्मा की उपस्थिति में आयोजित बैठक में परिवार नियोजन सेवाओं एवं जिले की स्वास्थ्य संस्थाओं में गुणवत्ता सुधार गतिविधियों की समीक्षा की गई।

बैठक में परिवार नियोजन क्षतिपूर्ति योजना के अंतर्गत परिवार नियोजन सेवा की असफलता से संबंधित एक प्रकरण पर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया। प्रकरण के तथ्यों, आवश्यक दस्तावेजों एवं निर्धारित प्रक्रियाओं का अवलोकन कर सुधारात्मक दिशा-निर्देश दिए गए। परिवार नियोजन सेवाओं में निर्धारित प्रोटोकॉल का पालन, लाभार्थियों को उचित परामर्श, आवश्यक सावधानियां बरतने तथा प्रकरणों की समयबद्ध रिपोर्टिंग सुनिश्चित करने पर विशेष जोर दिया गया।

कलेक्टर चंद्रवाल ने स्वास्थ्य सेवाओं में गुणवत्ता, सुरक्षा एवं जवाबदेही को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के निर्देश दिए। उन्होंने स्वास्थ्य संस्थाओं में नियमित आंतरिक मूल्यांकन, कमियों की पहचान एवं समयबद्ध निराकरण सुनिश्चित करने को कहा। बैठक में राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक (टदअर) एवं अन्य गुणवत्ता सुधार कार्यक्रमों के प्रभावी क्रियान्वयन तथा मूल्यांकन की तैयारियों पर भी चर्चा हुई। कलेक्टर ने अधिकारियों को आपसी समन्वय से नियमित मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिए, ताकि नागरिकों को सुरक्षित, सुलभ एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं मिल सकें।

बैठक में खैरागढ़ बीएमओ डॉ. विवेक बिसेन, छुईखदान बीएमओ एवं परिवार नियोजन कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डॉ. मनीष बघेल, जिला कार्यक्रम प्रबंधक श्रीमती सोनल ध्रुव, आईएमए प्रतिनिधि डॉ. पंकज वैष्णव, डॉ. बोधन परते, जिला सलाहकार आरएमएनसीएच्एच सुश्री आरती चतुर्विदानी तथा विधिक प्रकोष्ठ के सदस्य देवेंद्र ध्रुवे उपस्थित रहे।

गोवर्धन पूजा पर महापौर ने कांजी हाउस में की गौमाता की पूजा, खिलाई खिचड़ी

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

गोवर्धन पूजा के पावन पर्व पर राजनांदगांव में आस्था और परंपरा का अनूठा उल्लास देखने को मिला। महापौर मधुसूदन यादव ने कन्हारपुरी स्थित कांजी हाउस पहुंचकर विधि-विधान से गोवंश की पूजा-अर्चना की और गौमाता को अपने हाथों से खिचड़ी खिलाई। इसके साथ ही उन्होंने शहर के विभिन्न मंदिरों में पहुंचकर दर्शन किए और क्षेत्रवासियों के जीवन में सुख, समृद्धि, शांति व खुशहाली की कामना करते हुए सभी को दीपावली एवं गोवर्धन पूजा की आत्मीय शुभकामनाएं दीं।

इस धार्मिक और सामाजिक आयोजन के दौरान नगर निगम आयुक्त जीआर मरकाम, पुनर्वास तथा नियोजन विभाग के प्रभारी सदस्य डिलेश्वर साहू, पार्षदगण श्रीमती मोहनी युवराज भारती, श्रीमती रीना ओमप्रकाश सिन्हा और श्रीमती चन्द्रिका हिंसाराम साहू विशेष रूप से उपस्थित रहे।



प्रकृति, पशुधन और अन्न के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का पर्व : इस पावन अवसर पर महापौर श्री यादव ने प्रदेशवासियों को बधाई देते हुए कहा कि गोवर्धन पूजा छत्तीसगढ़ का एक प्रमुख और अत्यंत पारंपरिक त्योहार है। आज के दिन गौमाता की पूजा का विशेष महत्व है। गौमाता की सेवा और उनका संरक्षण हमारी धार्मिक आस्था के साथ-साथ हमारी सामाजिक और सांस्कृतिक परंपरा का भी एक अभिन्न अंग है। यह पर्व हमें प्रकृति, पशुधन और अन्न के महत्व को गहराई से समझने और उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने की प्रेरणा देता है।

महापौर ने भरकापारा स्थित प्राचीन मोतीनाथ मंदिर और महावीर चौक स्थित दक्षिणमुखी हनुमान मंदिर में भी पूजा-अर्चना की। मंदिरों में दर्शन के दौरान उन्होंने श्रद्धालुओं को दीपावली की बधाई दी और कहा कि शहर के लगभग सभी मंदिरों में अन्नकूट का भव्य भोग लगाकर प्रसादी का वितरण किया जा रहा है, जिससे पूरे शहर में एक बेहद सात्विक और धार्मिक वातावरण बना हुआ है।

कांजी हाउस का होगा जीर्णोद्धार : आयुक्त मरकाम

नगर निगम आयुक्त जीआर मरकाम ने सभी को दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि कन्हारपुरी कांजी हाउस में हर साल की तरह इस बार भी गोवर्धन पूजा का यह पर्व बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया गया है। उन्होंने घोषणा की कि कन्हारपुरी कांजी हाउस का जीर्णोद्धार कर इसे और बेहतर रूप दिया जाएगा। इसके अलावा, नगर निगम द्वारा संचालित अन्य सभी कांजी हाउसों में भी गौमाता के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाओं का संचालन पूरी तरह सुचारू रूप से करने के निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। इस अवसर पर मंदिरों व कांजी हाउस में बड़ी संख्या में ग्रामवासी और शहरवासी उपस्थित रहे, जिन्होंने अन्नकूट प्रसादी ग्रहण कर धर्मलाभ लिया।

सौगात पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य उपवन (चौपाटी) में नागरिकों की मनोरंजन सुविधाओं में बड़ा विस्तार किया गया

रानी सागर चौपाटी में बढ़ी रौनक : महापौर ने 7 नई नौकाओं का किया शुभारंभ, जल्द दौड़ेगी टॉय ट्रेन

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

शहर के ऐतिहासिक और प्रमुख पर्यटन स्थल रानी सागर के पास स्थित पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य उपवन (चौपाटी) में नागरिकों की मनोरंजन सुविधाओं में बड़ा विस्तार किया गया है। बुधवार को महापौर मधुसूदन यादव ने यहाँ 7 नई नौकाओं (बोट) का विधिवत पूजन कर उन्हें आम जनता को समर्पित किया। इस पहल से शहरवासियों, विशेषकर बच्चों और परिवारों में हर्ष का माहौल है। इस अवसर पर नगर निगम आयुक्त जीएस मरकाम, निगम अध्यक्ष टोपेन्द्र सिंह पारस वर्मा, महापौर परिषद के प्रभारी सदस्य सावन वर्मा व राजा माखीजा, पार्षदगण रवि सिन्हा, सतीश साहू, पार्षद प्रतिनिधि पंकज कुरंजेकर और राजेश यादव विशेष रूप से उपस्थित रहे।



दीपावली की सौगात और टॉय ट्रेन की जल्द होगी वापसी

महापौर मधुसूदन यादव ने इस दौरान सभी को दीपावली पर्व की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि नई नौकाओं के जुड़ने से रानी सागर की रौनक और बढ़ गई है। नगर निगम का निरंतर प्रयास है कि इस ऐतिहासिक धरोहर का चरणबद्ध तरीके से नवीनीकरण कर इसे इसके पुराने वैभव और आकर्षण पर लाया जाए। उन्होंने बड़ी घोषणा करते हुए बताया कि चौपाटी में लंबे समय से बंद पड़ी टॉय ट्रेन को भी जल्द ही पुनः प्रारंभ किया जा रहा है, जिसकी तैयारियाँ पूरी हो चुकी हैं। इसके शुरू होने से बच्चों के लिए आकर्षण का एक नया केंद्र तैयार होगा और रानी सागर में पर्यटकों की आवाजाही और अधिक बढ़ेगी।

कबाड़ से जुगाड़ और सेल्फी पॉइंट बना आकर्षण का केंद्र

नगर निगम आयुक्त जीएस मरकाम ने जानकारी दी कि उपवन के पाथवे की मरम्मत के साथ-साथ लक्ष्मण झूला, जिम उपकरण और बच्चों के लिए झूले दुरुस्त कर दिए गए हैं। इसके अलावा, कबाड़ से जुगाड़ की तर्ज पर अनुपयोगी सामग्रियों से शेर की आकर्षक आकृति तैयार कर इस स्थल को बेहतरीन सेल्फी पॉइंट के रूप में विकसित किया गया है। उपवन में रंग-रोगा और पौधों की ट्रिमिंग के साथ-साथ नागरिकों की सुविधा के लिए पुष्पवाटिका में सर्वसुविधायुक्त आकांक्षी शौचालय का निर्माण भी कराया गया है।

हरियाली और पर्यावरण संरक्षण का संकल्प

कार्यक्रम के दौरान पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से परिसर में 13 मौलश्री और 10 नारियल के पौधे रोपे गए। महापौर ने कहा कि निगम शहर की धरोहरों को संरक्षित करने के साथ आधुनिक सुविधाओं से जोड़ने के लिए प्रतिबद्ध है, ताकि रानी सागर पुनः नागरिकों के मनोरंजन और पर्यटन का प्रमुख केंद्र बन सके। इस अवसर पर कार्यपालन अभियंता दीपक खाण्डे, राजस्व अधिकारी मोबिन अली, समाज कल्याण अधिकारी भूपेन्द्र वाडेकर, प्रभारी स्वास्थ्य अधिकारी राजेश मिश्रा सहित बड़ी संख्या में निगम अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे।

इन्हें थी जरूरतमंदों की दिवाली की फिक्र इसलिए हर साल जरूरतमंदों के चेहरे पर पर खुशियां बिखेरने बांटते हैं कपड़े





नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

जरूरतमंदों की दीपावली को खुशियों से भरने एवं उनको भी दीपावली पर्व खुशियों से बनाने हेतु शहर के जन समर्पण सेवा संस्था दुर्ग ने हर साल की तरह इस साल भी दीपावली से पहले ही हर जरूरतमंद बच्चे बुजुर्ग पुरुष महिला दिव्यांग जनों को दीपावली बनाने के लिए हर वह सामग्री जिसकी उसको जरूरत है वह संस्था द्वारा वितरण किया गया.

शहर में कई ऐसी संस्थाएं है जो उन लोगों के साथ दीपावली की खुशियां बांट रही हैं, जिनके पास दो वक्त की रोटी तक का जुगाड़ मुश्किल होता है। ऐसा ही एक पिछले एक सप्ताह से जन समर्पण सेवा संस्था ने किया। संस्था ने पिछेले एक सप्ताह से शहर एवं गांव के विभिन्न आश्रम निचली बस्ती में जाकर वृद्ध जनों बच्चों को दीपावली के मौके पर नए कपड़े, पटाखे, मिठाई नमकीन बिस्किट चॉकलेट एवं अन्य सामग्री बांटी गई।

संस्था के अध्यक्ष एवं संस्थापक योगेन्द्र शर्मा बंटी ने बताया कि पिछले आठ साल से जरूरतमंद बच्चे वृद्धजनों के साथ खुशियों की दीपावली मनाने वाली संस्था जन समर्पण सेवा संस्था के सदस्यों ने इस बार 200 से ज्यादा बच्चों एवं 200 से अधिक बुजुर्गों के चेहरे पर मुस्कान बिखेरी। संस्था के सदस्यों ने दीपावली के पूर्व एक सप्ताह न सिर्फ पूरा दिन उनके साथ बिताया, बल्कि बच्चों एवं बुजुर्गों को उनकी जरूरतों की चीजें देने के साथ ही उनकी पसंद का नाश्ता भी कराया।

दीपों के त्योहार को दीपावली के नाम से अधिक जाना जाता है। फिर दीपावली जैसे त्योहारों पर हम अपने करीबी और प्यारे लोगों को कुछ नए कपड़े उपहार में देते थे। खासकर हमारे बच्चे के लिए और यह एक परंपरा है। लेकिन ऐसे कई बच्चे हैं, जो अनाथ है और एकल माता-पिता हैं जो उन्हें नए कपड़े नहीं दे सकते क्योंकि वे दूसरों के घरों में थोड़े से वेतन के साथ काम करते है या नौकरानी का काम कर रहे है, ऐसे जरूरतमंद बच्चों बुजुर्गों एवं महिलाओं को जन समर्पण सेवा संस्था, दुर्ग ने घरों में दीपावली के दौरान नए कपड़े, फटाखे और मिष्ठान, नमकीन उपलब्ध कराने का फैसला किया है।

इस वर्ष सभी के सहयोग से संस्था द्वारा लगभग 200 से अधिक बच्चे, 200 बुजुर्ग पुरुष एवं महिलाओं को नए कपड़े और दिवाली की मिठाई एवं नमकीन देने की योजना बनाई है। संस्था का यह दीपावली पर्व कमजोर बच्चों एवं कमजोर परिवार में खुशियां फैलाएगा। समाजवादी विचारधारा का जन्म ही समाज के निराश्रित एवं अंतिम पंक्ति के व्यक्ति को भी वह सुख सुविधाएँ पहुंचाने के लिए हुआ है, जिनसे अभी तक वह अछूता रहा है। एक सच्चे सामाजिक कार्यकर्ता का एकमात्र धर्म मानवता व सेवा होता है।

इन्ही बातों को आत्मसात करते हुए जन समर्पण सेवा संस्था दुर्ग जोकि विगत 9 वर्ष 11 माह से किसी एक दिन या किसी एक विशेष त्यौहार नहीं बल्कि बिना रुके बिना किसी दिन नागा किए 365 दिन दुर्ग रेल्वे स्टेशन एवं अन्य स्थानों में अस्थाई रुप से निवासरत मजदूर, असहाय, महिलाएं, बच्चों, विकलांग जनों को रात्रि में निःशुल्क भोजन वितरण किया जा रहा है, इसके साथ साथ विगत 9 वर्षों से संस्था के सभी युवा सदस्य सभी पर्व एवं त्योहारों में जरूरतमंदों की हर संभव मदद करते आ रहे है।

संस्था द्वारा विगत 9 वर्षों से दीपावली पर्व पर हर जरूरतमंदों तक मिठाई, नये कपड़े, फटाखे वितरण करती आ रही है, इस परम्परा को आगे बढ़ाते हुए इस वर्ष संस्था द्वारा जरूरतमंदों की खुशियों की दीपावली सप्ताह मनाया जा रहा है जिसमें दिनाँक 5 नवम्बर से 9 नवम्बर तक प्रतिदिन अलग अलग स्थानों जिसमें दुर्ग वृद्धा आश्रम अनाथ महिला हॉस्पिटल भिलाई वृद्धा आश्रम बाल आश्रम के साथ साथ दुर्ग भिलाई के सभी फुटपाथों ने में जाकर बच्चे, बुजुर्गों महिलाओं को दीपावली पर्व को धूमधाम से मनाने हेतु नये कपडे, मिठाई, नमकीन, फटाखे, साबुन, निरमा, एवं अन्य जरूरत की सामग्री वितरण किए।

इस सेवा कार्य मे सँस्था के अध्यक्ष योगेन्द्र शर्मा बंटी आशीष मेश्राम राजेन्द्र ताम्रकार अर्जित शुक्ला सुजल शर्मा प्रकाश कश्यप अख्तर खान अंकेश पेशवानी मृदुल गुप्ता रूपल गुप्ता ऋषि गुप्ता मोहित पुरोहित वासु शर्मा वेदांत शर्मा संजय सेन अनस खान हर्ष पाण्डेय मोंटू गुप्ता हरीश ढीमर दद्दू ढीमर शुभम सेन भागवत पटेल हेमंत ढीमर प्रकाश ठाकुर सार्थक शर्मा मोक्ष शर्मा एवं अन्य सदस्य उपस्थित थे।

सात स्थानों पर झपटमारी करने वाला आरोपी हुए गिरफ्तार



नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

दुर्ग जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों में नेशनल हाईवे और व्यस्त मार्गों पर महिलाओं को निशाना बनाकर मोबाइल, नकदी, बैग और सोने-चांदी के आभूषणों की झपटमारी करने वाले आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी ने जिले के चार थाना क्षेत्रों में सात अलग-अलग स्थानों पर झपटमारी की वारदातों को अंजाम दिया था। पुलिस ने उसके कब्जे से करीब 3 लाख 60 हजार रुपये कीमत का मशरूका बरामद किया है। इसमें सोने-चांदी के आभूषण, चार मोबाइल फोन, नकदी, दस्तावेज और वारदात में इस्तेमाल की जाने वाली मोटरसाइकिल शामिल है।

लगातार हो रही झपटमारी की घटनाओं को गंभीरता से लेते हुए वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के मार्गदर्शन में थाना खुसीपार पुलिस, एंटी क्राइम एंड साइबर यूनिट तथा संबंधित थानों की संयुक्त टीम गठित की गई थी। टीम ने घटनास्थलों के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाले और तकनीकी साक्ष्यों के साथ मुखबिर तंत्र को सक्रिय कर संदिग्धों की गतिविधियों पर नजर रखी। लगातार पतासाजी और आपसी समन्वय के बाद पुलिस ने घेराबंदी कर मुख्य आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की।

पुलिस के अनुसार गिरफ्तार आरोपी ने खुसीपार, पुरानी भिलाई, जामुल, छावनी और सुपेला थाना क्षेत्रों में झपटमारी की घटनाएं की थीं। इनमें खुसीपार थाना क्षेत्र के तुलसी ट्रेडर्स के सामने खुसीपार चौक पर मोबाइल और जेवरात छीने गए, जबकि डबरा पारा ओवरब्रिज के ऊपर से नकदी और दस्तावेजों से भरा बैग लेकर आरोपी फरार हो गया था। इसी तरह थाना पुरानी भिलाई क्षेत्र के नेशनल हाईवे पर मोबाइल झपटमारी की गई। थाना जामुल क्षेत्र के नंदनी रोड पर सोने के जेवरात और नकदी से भरा बैग छीना गया। थाना छावनी क्षेत्र में पावर हाउस ओवरब्रिज के ऊपर से मोबाइल और नकदी से भरा बैग लेकर आरोपी भाग निकला था।

वहीं थाना सुपेला क्षेत्र में चंद्रा-मौर्या टॉकीज के पास और ओवरब्रिज के ऊपर दो अलग-अलग झपटमारी की घटनाओं को अंजाम दिया गया। इन वारदातों में बैंक संबंधी दस्तावेज, कार्ड और आभूषण छीने गए थे। इन सभी घटनाओं के संबंध में संबंधित थानों में अलग-अलग अपराध दर्ज किए गए थे।

गिरफ्तार आरोपी की पहचान लक्ष्मण राव (29 वर्ष), पिता एस. सीमांचल राव, निवासी डीएमसी तालाब, कुम्हारी, थाना कुम्हारी, जिला दुर्ग के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से कुल करीब 3 लाख 60 हजार रुपये कीमत का मशरूका जब्त किया है। इसमें वारदात में इस्तेमाल की जाने वाली एक होंडा सीबी शाइन मोटरसाइकिल, 5 ग्राम का एक सोने का सिक्का, एक टूटा हुआ सोने का मंगलसूत्र, चार मोबाइल फोन (रेडमी और आईक्यूओओ सहित अन्य कंपनियों के), दो बड़े पर्स/बैग तथा 1300 रुपये नकद शामिल हैं।

इसके अलावा आरोपी के कब्जे से राशन कार्ड, पैन कार्ड, मतदाता परिचय पत्र, ड्राइविंग लाइसेंस, आरसी कार्ड, मेडिकल कार्ड, एसबीआई, बैंक ऑफ बड़ौदा, इंडियन बैंक, आईसीआईसीआई और आईडीबीआई सहित विभिन्न बैंकों के एटीएम/डेबिट कार्ड, एसबीआई की दो बैंक पासबुक, एक चेकबुक और एक डायरी भी बरामद की गई है।

दुर्ग पुलिस ने नागरिकों, विशेषकर महिलाओं से अपील की है कि भीड़भाड़ वाले इलाकों, ओवरब्रिज और सुनसान रास्तों पर चलते समय अपने मोबाइल, पर्स, बैग और सोने-चांदी के आभूषणों का विशेष ध्यान रखें। बैग को सड़क की ओर लटकाकर न चलें तथा सड़क पर चलते समय मोबाइल फोन पर बातचीत करने से बचें।

दो बाइकों की भीषण टक्कर, एक युवक की मौके पर मौत, दो गंभीर

नई दृष्टिबिंदु / जगदलपुर

छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में एक भीषण सड़क हादसा सामने आया है। दरभा थाना क्षेत्र के कमानार-बुड़गीभाटा मार्ग पर कड़मा डोंगरी घाट के पास दो मोटरसाइकिलों के बीच आमने-सामने जोरदार टक्कर हो गई। हादसा इतना भीषण था कि एक बाइक सवार युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दो अन्य युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को उपचार के लिए अस्पताल पहुंचाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद उनकी गंभीर स्थिति को देखते हुए मेडिकल कॉलेज डिमरापाल रेफर कर दिया गया।

घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और पंचनामा कार्रवाई कर मामले की जांच शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार, यह हादसा बस्तर जिले के कमानार-बुड़गीभाटा मार्ग पर स्थित कड़मा डोंगरी घाट के पास हुआ। यहां दो मोटरसाइकिलें विपरीत दिशा से आ रही थीं। इसी दौरान दोनों बाइकों के बीच आमने-सामने जोरदार टक्कर हो गई। टक्कर इतनी भीषण थी कि बाइक सवार युवक दीपक नाग की घटनास्थल पर ही मौत हो गई।

सड़क दुर्घटना में जान गंवाने वाले युवक की पहचान दीपक नाग के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि दोनों मोटरसाइकिलों के बीच हुई जोरदार भिड़ंत के कारण दीपक को गंभीर चोटें आईं और उसकी मौके पर ही मौत हो गई। इस हादसे में गौरव नाग और किरण नाग भी गंभीर रूप से घायल हुए हैं। दोनों को तत्काल उपचार के लिए अस्पताल ले जाया गया। दुर्घटना में एक युवक की मौत और दो अन्य के गंभीर रूप से घायल होने से घटना की गंभीरता सामने आई है।

हादसे में घायल गौरव नाग और किरण नाग की स्थिति गंभीर बताई जा रही है। दुर्घटना के बाद दोनों घायलों को तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया, जहां उनका प्राथमिक उपचार किया गया। चिकित्सकों ने दोनों की गंभीर स्थिति को देखते हुए उन्हें बेहतर इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज डिमरापाल रेफर कर दिया है। दोनों घायलों को आगे के उपचार के लिए मेडिकल कॉलेज भेजा गया है। फिलहाल घायलों के उपचार से संबंधित विस्तृत जानकारी सामने नहीं आई है।

ड्राइवरों का आंदोलन, बसों का संचालन प्रभावित, यात्री हो रहे हलाकान

नई दृष्टिबिंदु / बलौदाबाजार

देशभर में 12 नवंबर से शुरू हुए ड्राइवरों के स्टीयरिंग छोड़ो अभियान का असर छत्तीसगढ़ के बलौदाबाजार में भी दिखाई देने लगा है। अखिल भारतीय ड्राइवर जॉइंट कमेटी के आह्वान पर ड्राइवरों ने अपनी विभिन्न मांगों को लेकर हड़ताल शुरू कर दी है। आंदोलन के चलते यात्री बसों का संचालन प्रभावित हुआ है, जिससे यात्रियों को आने-जाने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। बलौदाबाजार जिला ड्राइवर महासंघ के सदस्य भी देशव्यापी आंदोलन के समर्थन में उतर आए हैं। ड्राइवरों ने अपनी मांगों को लेकर सकरी बाईपास पर धरना शुरू कर दिया है। आंदोलनरत ड्राइवरों का कहना है कि लंबे समय से उनकी मांगों पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है, जिसके चलते उन्हें हड़ताल का रास्ता अपनाना पड़ा है।



सकरी बाईपास पर धरने पर बैठे ड्राइवर अखिल भारतीय ड्राइवर जॉइंट कमेटी के आह्वान पर बलौदाबाजार जिला ड्राइवर महासंघ ने भी स्टीयरिंग छोड़ो अभियान का समर्थन किया है। महासंघ के सदस्य सकरी बाईपास पर एकत्रित होकर धरने पर बैठ गए हैं। आंदोलन के माध्यम से ड्राइवर अपनी लंबित मांगों की ओर शासन का ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। ड्राइवरों का कहना है कि उनके अधिकारों, सुरक्षा और कल्याण से संबंधित मांगों को लंबे समय से नजरअंदाज किया जा रहा है। इसी के चलते अब देशव्यापी आंदोलन के समर्थन में हड़ताल शुरू की गई है।

राष्ट्रीय ड्राइवर आयोग और वेलफेयर बोर्ड बनाने की मांग आंदोलनरत ड्राइवरों की प्रमुख मांगों में राष्ट्रीय ड्राइवर आयोग का गठन, ड्राइवर वेलफेयर बोर्ड की स्थापना और ड्राइवरों की सुरक्षा के लिए विशेष कानून बनाना शामिल है। ड्राइवरों का कहना है कि उनके अधिकारों की रक्षा और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए ठोस व्यवस्था बनाई जानी चाहिए। राष्ट्रीय स्तर पर ड्राइवर आयोग और वेलफेयर बोर्ड के गठन की मांग को लेकर वे आंदोलन कर रहे हैं। महासंघ के सदस्यों ने अपनी मांगों को लेकर धरना शुरू करते हुए शासन से आवश्यक कदम उठाने की मांग की है।

बलौदाबाजार-रायपुर मार्ग पर बस संचालन प्रभावित होने की आशंका ड्राइवरों की हड़ताल के कारण बलौदाबाजार से रायपुर समेत आसपास के जिलों के विभिन्न मार्गों पर यात्री बसों और माल परिवहन व्यवस्था के प्रभावित होने की आशंका है।

मुद्दे की बात

डॉ.सोनाली चक्रवर्ती के साथ

दिवाली के बाद एक जरूरी बातचीत - त्योहार भी, सांस भी



दिवाली हो गई। घर-घर दीये जले, लोग घर लौटे, लक्ष्मी पूजन हुआ, बच्चों की हंसी गूंजी और आसमान रंग-बिरंगे पटाखों से सज भी गया। सबने जी-जान से त्योहार मनाया। और इसी के साथ हर साल की तरह एक और चीज लौट आई है - धुंध भरी सुबह, गले में खराश और अदब्लीटर पर बढ़ते आंकड़े।

यहाँ एक बात साफ कर दूं - यह लेख किसी को पटाखों के लिए डांटने या त्योहार मनाने से रोकने के लिए नहीं है। दिवाली हमारी आस्था है, हमारी खुशी है, हमारी परम्परा है। उसे कोई हमसे छीन नहीं रहा। सवाल सिर्फ इतना है - जब हम खुद इतने समझदार हो गए हैं कि ज्यादा धुआं देने वाली चीजों से बच सकें, तो क्या हम वही समझदारी अपने सबसे प्यारे त्योहार पर भी नहीं दिखा सकते? पटाखों के लिए मना करते ही हम रक्षात्मक क्यों हो जाते हैं? हमें क्यों लगता है कि कोई हमारी धार्मिक भावना पर हमला कर रहा है? कोई नहीं कह रहा कि दीये मत जलाओ, पूजा मत करो, मिठाई मत बांटो। बात सिर्फ इतनी है कि जो पटाखा सबसे ज्यादा जहरीला धुआं देता है, उसे क्या हम अवॉयड नहीं कर सकते?

हमने बदलाव तो हमेशा अपनाए हैं। बहुत सारा पहले सब पैदल चलते थे, आज हम गाड़ियों में चलते हैं। पहले हम बस में यात्रा करते थे, अब हवाई जहाज से करते हैं। पहले चूल्हे पर खाना पकता था अब माइक्रोवेव है, पहले घर में पंखे भी नहीं थे, आज सबके घर में AC है। समय के साथ सुविधाएं बदलीं, तो आदतें भी बदलीं। फिर क्या हम त्योहार मनाने के तरीके में थोड़ा सा बदलाव नहीं ला सकते, ताकि त्योहार भी रहे और हवा भी साफ रहे?

एक सवाल खुद से पूछना जरूरी है - क्या हमने जितने पटाखे फोड़े, उतने पेड़ भी लगाए? क्या हमने जितना धुआं हवा में छोड़ा, उतना प्लास्टिक को मना किया? त्योहार एक दिन का है, लेकिन उसकी हवा में हम कई दिनों तक सांस लेते हैं। तो चलिए, दिवाली मना ली, अब अगले कदम पर बात करते हैं। बढ़ते प्रदूषण के निराकरण के लिए हम आम लोग क्या कर सकते हैं? ये रहे 5 प्रैक्टिकल आइडिया:

ग्रीन दिवाली का ट्रेंड बनाएं : बाजार में अब कम धुआं वाले, कम आवाज वाले और लाइट वाले पटाखे आ गए हैं। अगली बार पूरे मोहल्ले वाले तय करें कि हम सिर्फ वही लेंगे। बच्चों को फुलझड़ी, अनार और लाइट वाले आइटम ज्यादा पसंद भी आते हैं। शोर कम, रोशनी ज्यादा।

एक पटाखा, एक पेड़ का नियम : हर परिवार एक नियम बना ले - जितने हजार के पटाखे, उतने पेड़। आपने 2 हजार के पटाखे लिए तो कम से कम 2 पेड़ लगाइए और एक साल तक उनकी देखभाल कीजिए। भिलाई-दुर्ग में तो नर्सरी से पौधे बहुत सस्ते मिल जाते हैं। यह हिसाब बराबर करने का सबसे सुंदर तरीका है।

कचरा और प्लास्टिक पर सख्ती : पटाखों का धुआं एक दिन, लेकिन पटाखों का कागज-प्लास्टिक कचरा और रोज का सिंगल यूज प्लास्टिक महीनों तक नालियों और जमीन में रहता है। इस हफ्ते से एक छोटा संकल्प लें - बाजार में कपड़े का थैला लेकर जाना, घर में कचरे को गीला-सूखा अलग करना। यह प्रदूषण रोकने में पटाखे रोकने से भी बड़ा कदम है।

पब्लिक ट्रांसपोर्ट और कार पूलिंग : हम गाड़ियों के धुएं को भूल जाते हैं। दिवाली के बाद शादियों का सीजन है। कोशिश करें कि 2-3 परिवार मिलकर एक गाड़ी में जाएं। रोज ऑफिस के लिए भी हफ्ते में एक दिन कार पूलिंग किया जा सकता है। एक गाड़ी कम मतलब हजारों सिगरेट के बराबर धुआं कम।

मोहल्ले या सड़क का एयर मॉनिटर ग्रुप : हर कॉलोनी में एक छोटा व्हाट्सएप ग्रुप बनाएं - "हमारी साफ हवा" । उसमें लोग अपने घर के आसपास कचरा जलाने, पत्ते जलाने की फोटो डालें और रोकें। कचरा जलाना पटाखों से भी ज्यादा खतरनाक है और यह साल भर चलता है।

अंत में बस इतना - त्योहार हमें जोड़ने के लिए हैं, डराने के लिए नहीं। अगर हम थोड़ी सी जागरूकता दिखाएंगे, तो अगली दिवाली में दीयों की रोशनी धुंध में नहीं, साफ आसमान में ज्यादा चमकेगी। और हां! आने वाली पीढ़ी के लिए धुआं, प्रदूषण, कचरा मुक्त एक सुंदर पृथ्वी छोड़कर जा पाएंगे।







"यह समाचार पत्र आलोक तिवारी द्वारा 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से आलोक तिवारी की ओर से प्रकाशित की जाती है, जिसका संपादन आलोक तिवारी द्वारा किया जाता है तथा इसका मुद्रण समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 पर किया जाता है। (समाचार चयन के लिए PRP Act, 2023 के तहत संपादक जिम्मेदार है)। समस्त विवादों का निपटारा न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।" संपादक आलोक तिवारी, मो. 74154-69100